सब का सपना

निष्पक्ष व निडर- हिंदी दैनिक समाचार पत्र

धोनी से आगे निकल जाएंगे पंत, गिलक्रिस्ट भी पीछे छूट सकते हैं : आकाश चोपड़ा -पेज: 7

बैटल ऑफ गलवान का उद्देश्य वास्तविक नायकों को सम्मान देना है: चित्रांगदा सिंह -पेज: 8

वर्ष: 01 | अंक: 123 | सोमवार 11 अगस्त 2025 | अमरोहा (उत्तर प्रदेश) | www.sabkasapna.com | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2 रुपए

प्रधानमंत्री ने तीन नई वंदे भारत, मेट्रो समेत कई विकाश परियोजनाओं का शुभारम्भ व शिलान्यास किया

बेंगलुरु (एजेंसी): प्रधानमंत्री ने तीन नई वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर का शुभारम्भ भारत, येलो लाईन मेट्रो समेत कई विकाश परियोजनाओं का शुभारम्म व शिलान्यास किया।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बेंगलुरु से बेलगावी के बीच चलने वाली नई वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को स्वंय हरी झंडी रवाना किया।जबकि श्री माता वैष्णो देवी कटरा-अमृतसर और अजनी (नागपुर) से पुणे के लिए जाने वाली वंदे भारत सेवाओं की शुरूआत डिजिटल माध्यम से की। इस खास मौके पर मोदी के साथ कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत मुख्यमंत्री सिद्धरमैया,केंद्रीय रेल मंत्रीअश्विनी वैष्णव सहित अन्य लोग गणमान्य हस्तियाँ उपस्थित थे। आपको को बता दें प्रधानमंत्री मोदी जब अपने काफिले के साथ केसी आर रेलवे स्टेशन की ओर बढ़े,तो सड़क के दोनों ओर बड़ी संख्या में एकत्र लोगों ने मोदी, मोदी के नारे लगाकर उनका स्वागत किया।मोदी ने भी अपनी कार के अंदर ने उनका हाथ हिलाकर अभिवादन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बेंगलुरु दौरे पर हैं। वे बेंगलुरु–बेलगावी वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई और बेंगलुरु मेट्रो की येलो लाइन का भी उद्घाटन किया।

किया। इन तीन वंदे भारत सेवाओं के बारे में ई डी आई पी दिलीप कुमार रेलवे ने कहा कि यह नई वंदे भारत ट्रेनें लोगों के बीच कनेक्टिविटी को और भी ज्यादा मजबूत करेंगी और यात्रियों को विश्वस्तरीय यात्रा का अनुभव प्रदान करेंगी।गौरतलब रहे कि बेंगलुरु से बेलगावी तक चलने वाली यह वंदे भारत एक्सप्रेस कर्नाटक में संचालित होने वाली 11वी वंदे भारत ट्रेन है। उनके मुताबिक इसके शुरू होने के बाद 611 किलोमीटर की दूरी मात्र 8.5 घंटे में तय की जा सकेगी। यह इन दोनों शहरों के बीच सबसे तेज गति की ट्रेन है,जिससे मौजूदा ट्रेन सेवाओं की तुलना में केएसआर(क्रांतिवीर संगोल्लि रायाण्ण) बेंगलुरु से बेलगावी तक लगभग एक घंटे 20 मिनट और बेलगावी-केएसआर बेंगलुरु तक एक घंटे 40 मिनट की बचत होगी। उन्होंने कहा कि यह ट्रेन भारत के सिलिकॉन सिटी बेंगलुरु को प्रमुख मेडीकल और इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट के केंद्र बेलगावी से जोड़ती है, जिससे क्षेत्र में आर्थिक और शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा मिलेगा।यह मार्ग कर्नाटक के समृद्ध गन्ना क्षेत्र और धारवाड़, हुबली, हावेरी, दावणगेरे एवं तुमकुरु जैसे प्रमुख शहरों से होकर गुजरता है।धारवाड़ अपने प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के लिए प्रसिद्ध है,वहीं हुबली एक बेहतर इंडस्ट्रीयल क्षेत्र है,जबकि हावेरी एक उभरता हुआ कृषि केंद्र है और दावणगेरे कपड़ा एवं कृषि के लिए प्रसिद्ध है तथा तुमकुरु एक बढ़ता हुआ औद्योगिक एवं शैक्षिक केंद्र है। नरेद्र मोदी बेंगलुरु मेट्रो रेल की बहुप्रतीक्षित येलो लाइन का भी उद्घाटन किया।इससे बेंगलुरु के आईटी केंद्र को जोड़ने वाले कई भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में यातायात की भीड़ कम होने की उम्मीद है। पीएम ने आरवी रोड (रागीगुड्डा) से इलेक्ट्रॉनिक सिटी मेट्रो स्टेशन तक मेट्रो में मुख्यमंत्री,उपमुख्यमंत्री समेत तमाम नेताओं के साथ सवारी भी की और यात्रा के दौरान छात्रों से बातचीत की।अधिकारियों ने बताया कि लगभग 7,160 करोड़ रुपये की लागत वाली बेंगलुरु मेट्रो की द्वितीय चरण की परियोजना के तहत आरवी रोड से बोम्मासंद्रा तक 19 किलो मीटर से अधिक लंबे मार्ग में 16 स्टेशन हैं।येलो लाइन के शुरू होने से बेंगलुरु में मेट्रो रेल का परिचालन नेटवर्क 96 किलोमीटर से अधिक हो जाएगा,जो क्षेत्र की एक बड़ी उपलब्धि होगी। आप को बता दें स्वंय मोदी नेअपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर 9 अगस्त दिन शनिवार को लिखा था

खरगे कांग्रेस की महाराष्ट्र इकाई के नए पदाधिकारियों के लिए कार्यशाला का उद्घाटन करेंगे

महाराष्ट्र (एजेंसी): कांग्रेस की महाराष्ट्र इकाई अपने नवनियुक्त पदाधिकारियों के लिए सोमवार से पुणे के पास एक रिजॉर्ट में दो दिवसीय आवासीय कार्यशाला आयोजित करेगी जिसका उद्घाटन कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे डिजिटल माध्यम से करेंगे। पार्टी के एक बयान में कहा गया है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के महाराष्ट्र प्रभारी रमेश चेन्नितला और कांग्रेस की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल सहित वरिष्ठ नेता इस दो दिवसीय कार्यक्रम में मौजूद रहेंगे। पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण, कांग्रेस विधायक दल के नेता विजय वडेट्टीवार, विधान परिषद समूह के नेता सतेज पाटिल, कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य बालासाहेब थोराट और अन्य वरिष्ठ नेता भी कार्यशाला में भाग लेंगे। कई पैनल चचाएं और संवादात्मक सत्र होंगे। बयान में कहा गया कि कार्यशाला के दौरान राज्य कांग्रेस की राजनीतिक मामलों की समिति की भी बैठक होगी। \हाल में, महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने अपनी 387 सदस्यीय समिति की घोषणा की। सपकाल ने इसे यह कहते हुए उचित ठहराया कि यह उन कार्यकताओं को समायोजित करने के लिए आवश्यक था, जो कुछ पूर्व विधायकों के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होने के बावजूद पार्टी के प्रति वफादार रहे हैं।

ऑपरेशन सिंदूर किसी भी पारंपरिक मिशन से अलग था: थलसेना प्रमुख

नई दिल्ली (एजेंसी): थलसेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर किसी भी पारंपरिक मिशन से अलग था और यह शतरंज की बाजी जैसा था क्योंकि हमें नहीं पता था कि दुश्मन की अगली चाल क्या होगी। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी)-मद्रास में एक समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने 22 अप्रैल के पहलगाम हमले के जवाब में आतंकी ढांचे को निशाना बनाकर मई में की गई भारत की निर्णायक सैन्य कार्रवाई की जटिलताओं को याद किया। जनरल द्विवेदी ने इसे शतरंज की बाजी बताया। उन्होंने कहा, ऑपरेशन सिंदूर में हमने शतरंज की बाजी खेली। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि हमें नहीं पता था कि दुश्मन की अगली चाल क्या

होगी और हम क्या करने वाले हैं। इसे हम ग्रे जोन कहते हैं। ग्रे जोन का मतलब है कि हम पारंपरिक ऑपरेशन नहीं कर रहे, लेकिन हम कुछ ऐसा कर रहे हैं जो पारंपरिक ऑपरेशन से थोड़ा हटकर हो। उन्होंने कहा, पारंपरिक ऑपरेशन का मतलब है, सबकुछ लेकर जाओ, जो कुछ आपके पास है उसे ले जाएं और अगर आप वापस आ सकते हैं तो वापस आ जाएं, नहीं तो वहीं रहें। इसे पारंपरिक तरीका कहा जाता है। यहां, ग्रे जोन का मतलब है कि हर क्षेत्र में होने वाली कोई भी गतिविधि, हम इसी के बारे में बात कर रहे हैं और ऑपरेशन सिंदूर ने हमें सिखाया कि यही ग्रे जोन है। सेना प्रमुख ने कहा, हम शतरंज की बाजी खेल रहे थे और वह (दुश्मन) भी शतरंज की चालें चल रहा था। कहीं हम उन्हें शह और मात दे रहे थे, तो कहीं हम अपनी जान गंवाने के जोखिम पर भी उसे मात देने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन जिंदगी का यही मतलब है। मई में ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकी समूहों से जुड़े कई ठिकानों पर सटीक हमले किए। इस अभियान का उद्देश्य पहलगाम हमले के बाद आतंकी ढांचे को नष्ट करना और प्रमुख आतंकवादियों को मार गिराना था।

आतंक के अड्डों को तबाह किया, पाकिस्तान को घुटनों पर लाए, बेंगलुरु में ऑपरेशन सिंदूर पर : पीएम मोदी

बेंगलुरु (एजेंसी): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज देश की आईटी सिटी बेंगलुरु के दौरे पर हैं। वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाने से लेकर नम्मा मेट्रो की येलो लाइन शुरू करने तक, पीएम मोदी ने बेंगलुरु को कई बड़ी सौगातें दी हैं। इस दौरान पीएम मोदी ऑपरेशन सिंदूर पर भी बात की है। बेंगलुरु में लोगों को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के तहत हमने न सिर्फ आतंक के अड्डों को तबाह कर दिया बल्कि पाकिस्तान को भी घुटनों पर ले आए। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान दुनिया ने पहली बार भारत का नया चेहरा देखा है। ऑपरेशन सिंदूर पर पीएम मोदी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, ऑपरेशन सिंदूर के बाद आज मैं पहली बार बेंगलुरु आया हूं। ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेनाओं

की सफलता सीमा पार, कई किलोमीटर भीतर आतंकवादी ठिकानों को नेस्तनाबूत करने की ताकत और आतंकवादियों के बचाव में उतरे पाकिस्तान को कुछ ही घंटों में घुटनों पर लाने की हमारी क्षमता। पूरी दुनिया ने नए भारत के स्वरूप के दर्शन किए हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था पर बात करते हुए पीएम मोदी ने कहा- पीएम मोदी ने गिनाई उपलब्धियां पीएम मोदी ने कहा, 2014 में सिर्फ 5 शहरों में मेट्रो चलती थी। अब 24 शहरों में 1000 किलोमीटर से ज्यादा का सफर मेट्रो से किया जा सकता है। 2014 से पहले रेलवे रूट 20,000 किलोमीटर का था, जो अब बढ़कर 40,000 किलोमीटर का हो गया है। देश को 74 नए एअरपोर्ट मिले हैं। पीएम मोदी ने कहा कि देश में डिजिटलाइजेशन का दायरा गांव-गांव तक पहुंच गया है। दुनिया का 50 प्रतिशत से ज्यादा रियल टाइम लेन-देन यूपीआई पर हो रहा है। टेक आत्मनिर्भर भारत देश का फ्यूचर प्लान बताते हुए पीएम मोदी ने कहा, अब हमारा अगला लक्ष्य तकनीकी में आत्मनिर्भर होना है। भारतीय कंपनियों ने पूरी दुनिया में अपनी छाप छोड़ी है। अब समय है कि हम भारत की जरूरतों को प्राथमिकता दें। आज हर डोमेन में सॉफ्टवेयर और ऐप का इस्तेमाल हो रहा है। इसमें भारत को नई ऊंचाईयों पर पहुंचाना बहुत जरूरी है।

भाजपा भ्रष्टाचार का विश्वविद्यालय है और चुनावी भ्रष्टाचार का ब्रह्मांडविद्यालय : अखिलेश यादव

लखनऊ (एजेंसी): समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने रविवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर हमला बोलते हुए उसे भ्रष्टाचार का विश्वविद्यालय और चुनावी भ्रष्टाचार का ब्रह्मांडविद्यालय करार दिया। सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में यादव ने कहा, भाजपा भ्रष्टाचार का विश्वविद्यालय है और चुनावी भ्रष्टाचार का ब्रह्मांडविद्यालय। यादव ने कहा, हकमारी और मतमारी से भाजपा लोकतंत्र को खत्म करने का जो षड्यंत्र रच रही है, हम सब मिलकर उसे कामयाब नहीं होने देंगे। उन्होंने आम जनता को समझते हुए दावा किया, भाजपा कुछ लोगों की मिलीभगत से कभी अपने समर्थक फर्जी मतदाताओं का नाम बढ़ा देती है। यादव ने कहा, भाजपा सत्ता सजातीय अधिकारियों की साठगांठ से कभी अपने विरोधी मतदाताओं का नाम कटा देती है। भाजपा बूथ पर

अपने चुनिंदा लोगों को सेट करके फर्जी वोट डालने का टारगेट देती है। सपा प्रमुख ने यह भी आरोप लगाया, भाजपा बंदूक तानकर कभी मत डालने से रुकवाती है। भाजपा अपने समर्थकों से कई-कई वोट डलवाती है। भाजपा अपने समर्थकों के नकली आईडी बनवाकर अपने लिए फर्जी मतदान करवाती है। यादव ने तीखा हमला करते हुए कहा, भाजपा फोर्स लगाकर कभी ईवीएम बदलवा देती है। भाजपा कभी सीसीटीवी के सामने, अपने विरुद्ध डाले गये मतों को खारिज भी करवाती है। भाजपा डीएम से कभी जीत का सर्टिफिकेट भी बदलवाती है। मतदाता कहे आज का, नहीं चाहिए भाजपा।

राहुल जी, आप हर समय झूठ क्यों बोलते हैं? ऑपरेशन सिंदूर पर आईएएफ चीफ के बयान के बाद बरसे किरेन रिजिजू

नई दिल्ली (एजेंसी): ऑपरेशन सिंदूर पर शनिवार को वायु सेना प्रमुख ने कई बड़े खुलासे किए। वायु सेना प्रमुख एअर मार्शल एपी सिंह ने कहा कि इस दौरान पाकिस्तान के पांच फाइटर जेट सहित 6 विमान मार गिराए। वायुसेना प्रमुख एअर मार्शल एपी सिंह के बयान के बाद केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर निशाना साधा है। दरअसल, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट करते हुए किरेन रिजिजू ने लिखा कि मैं राहुल गांधी जी से अनुरोध करता हूं कि भारत की संसद की मयार्दा बनाए रखे। इस दौरान किरेन रिजिजू ने एक क्लिप भी पोस्ट की, जिसमें राहुल गांधी का बयान और वायु सेना प्रमुख का बयान सुना जा सकता है। किरेन रिजिजू ने राहुल गांधी पर साधा निशाना अपने एक्स पोस्ट में किरेन रिजिजू ने लिखा कि मैंने कई विपक्ष के नेताओं को संसदीय मयार्दा का पालन करते हुए देखा है। राहुल गांधी पर हमला करते हुए कहा कि उन्होंने न केवल अपना कद

गिराया है, बल्कि भारत की प्रतिष्ठा को भी ठेस पहुंचाई है। वायुसेना प्रमुख ने इन बातों का किया खंडन जानकारी दें कि संसद में बोलते हुए राहुल गांधी ने दावा किया था कि सरकार ने सेना पर प्रतिबंध लगा दिए। हालांकि, वायु सेना प्रमुख एअर मार्शल चीफ एपी सिंह ने इन बातों का खंडन किया। एक कार्यक्रम के दौरान एअर मार्शल चीफ ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का श्रेय दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति और सशस्त्र बलों को दी गई खुली छूट को दिया। ऑपरेशन सिंदूर पर क्या बोले वायु सेना प्रमुख अपने बयान में वायु सेना प्रमुख एअर मार्शल चीफ एपी सिंह ने कहा कि मैं बैठकों में मौजूद था। राजनीतिक इच्छाशक्ति बहुत ही स्पष्ट थी और कोई प्रतिबंध नहीं लगाए गए थे। अगर कोई प्रतिबंध थे भी, तो वे रक्षा बलों द्वारा स्वयं लगाए गए थे। उन्होंने यह भी बताया कि सेना को आतंकवादी ठिकानों और पाकिस्तानी हवाई अड्डों पर हमलों की योजना बनाने और उन्हें अंजाम देने की पूरी आजादी थी। उन्होंने थलसेना, वायुसेना और नौसेना के बीच समन्वय के साथ-साथ सीडीएस तथा एनएसए की भूमिका की भी सराहना की। क्या थे राहुल गांधी के आरोप? गौरतलब है कि राहुल गांधी ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर दावा किया था कि सरकार ने सेना के हाथ बांध दिए थे। उन्होंने आरोप लगाया कि आप पाकिस्तान गए और हमारे पायलटों से कहा कि वे उनकी वायु रक्षा प्रणाली पर हमला ना करें। आपने हमारे पायलटों के हाथ बांध दिए थे। हालांकि, उन्होंने राहुल गांधी ने तुरंत स्पष्ट किया कि भारतीय वायु सेना ने कुछ भी गलत नहीं किया, बल्कि राजनीतिक नेतृत्व पर सैन्य ठिकानों पर हमला करने से रोकने का आरोप लगाया।

चुनाव से पहले नीतीश सरकार की बड़ी सौगात, 1.12 करोड़ लोगों के खाते में भेजे 1100-1100 रुपए

पटना (एजेंसी): मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आज 1 अणे मार्ग स्थित संकल्प में आयोजित कार्यक्रम में सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के अन्तर्गत 1 करोड़ 12 लाख से अधिक पेंशनधारियों के खाते में 1247.34 करोड़ रुपए की राशि माउस क्लिक कर डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरित किया। सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के लाभार्थियों को जुलाई माह की 1100 रूपए की पेंशन राशि उनके खाते में अंतरित की गई है। कार्यक्रम में समाज कल्याण विभाग की सचिव बंदना प्रेयषी ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत जुलाई माह में दी जाने वाली पेंशन की राशि एवं लाभार्थियों की संख्या के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि समाज कल्याण विभाग मुख्यमंत्री के निदेर्शानुसार सभी योग्य सामाजिक सुरक्षा पेंशनधारियों को इसका लाभ दिलाने के लिए पूरी तरह कटिबद्ध है। पेंशन को और सुलभ बनाने के लिये समाज कल्याण विभाग ने एक टॉल फ्री नम्बर 18003456262 जारी किया है। जिस पर पेंशन संबंधित किसी प्रकार की सूचना प्राप्त की जा सकती है और शिकायत दर्ज की जा सकती है। आज के इस अवसर पर बिहार के सभी 38 जिलों में कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, जिनमें जिले के जनप्रतिनिधिगण, जिलाधिकारी, लाभार्थीगण जुड़े हुए है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

मुख्यमंत्री ने कहा कि बहुत खुशी की बात है कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन के तहत सभी वृद्धजनों, दिव्यांगजनों एवं विधवा महिलाओं को आज 11 सौ रुपए की दर से जुलाई माह की पेंशन की राशि उनके बैंक खाते में अंतरित की गई है। प्रत्येक माह की 10 तारीख को सभी लाभुकों के खाते में पेंशन की राशि भेजने का मैंने पहले ही निर्देश दिया है। समय पर पेंशन की राशि लाभुकों के खाते में पहुंचने से उन्हें सहूलियत होगी। कोई भी योग्य सामाजिक पेंशनधारी छूटे नहीं इसका विशेष ख्याल रखें। जो भी सामाजिक पेंशनधारी छूटे हुए है उनको भी इसका शीघ्र लाभ दिलाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा जून माह से सामाजिक सुरक्षा पेंशन के तहत

केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने राहुल गांधी पर चुनाव आयोग के खिलाफ गलत आरोप लगाने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी झूठ फैलाकर जनता को गुमराह कर रहे हैं।

वृद्धजनों, दिव्यांगजनों एवं विधवा महिलाओं को हर माह मिलने वाली पेंशन की राशि 400 रुपए से बढ़ाकर 1100 रुपये प्रतिमाह कर दी गई है। इस निर्णय के आलोक में 11 जुलाई, 2025 को मेरे द्वारा कुल 1 करोड़ 11 लाख लाभुकों को 11 सौ रुपये प्रति लाभुक की दर से जून माह की राशि उनके बैंक खाते में सीधे भेज दी गयी। इस काम में राज्य सरकार के द्वारा कुल 1 हजार 2 सौ 27 करोड़ रुपये की राशि खर्च की गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि समाज कल्याण विभाग के अधिकारियों ने बताया है कि विगत एक माह में लगभग 1 लाख नये लाभुक पेंशन योजना के तहत जोड़े गये हैं। इस प्रकार जुलाई माह में लगभग 1 करोड़ 12 लाख लाभुकों को 11 सौ रुपये की दर से पेंशन की राशि उनके खाते में मेजी जायेगी। इस काम में राज्य सरकार के द्वारा कुल 1 हजार 2 सौ 47 करोड़ रुपये की राशि खर्च की जा रही है। उन्होंने कहा कि 24 नवंबर, 2005 को सरकार में आने के बाद से हमलोगों ने राज्य के विकास के लिए लगातार काम किया है। हमने शुरू से ही सभी वर्गों के उत्थान के लिए कई योजनाएं चलाई है। समाज के कमजोर तबकों के हित के लिए हमलोग निरंतर काम कर रहे हैं। ज्ञातव्य है कि राज्य में 06 सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं क्रियान्वित की जा रही है, जिसमें 03 केन्द्र सरकार द्वारा तथा 03 पेंशन योजनाएं राज्य सरकार द्वारा संचालित की जा रही हैं। राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम अन्तर्गत राष्ट्रीय पेंशन योजनाएं- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना एवं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय निःशक्तता पेंशन योजना हैं।

संपादकीय

ट्रंप को सधा सा जवाब

लगता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ड़ोनाल्ड़ ट्रंप के टैरिफ दबाव का मुकाबला करने को लेकर भारत कमर कस रहा है। ट्रंप को साफ संदेश देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत अपने किसानोंङ्क मछुआरों और ड़ेयरी क्षेत्र से जुड़े.लोगों के हितों से समझौता नहीं करेगा। दरअसल, अमेरिका की नजर भारत के कृषि और डेय़री बाजार पर है। वह चाहता है कि भारत अमेरिकी कंपनियों को भारतीय बाजार में खुलकर खेलने की छूट दे। इसी बात को पूरा होता न देख ट्रंप बौखला गए हैं। मोदी जानते हैं कि मुकाबला आसान नहीं होगा क्योंकि भारत को दबाव में लाने के लिए ट्रंप ऐसे कदम उठा रहे हैं जैसे उनकी भारत से कोई निजी खुन्नस हो जबकि उनके कदमों से दुनिया का कोई देश सहमत नहीं है। ट्रंप भारतीय वस्तुओं पर टैरिफ बढा कर 50 फीसद कर चुके हैं। यह सब ऐसे वक्त में हो रहा है जब दोनों देश द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर चर्चा कर रहे हैं। अमेरिका मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम और इथेनॉल जैसे उत्पादों पर शुल्क कम करने के साथ-साथ अपने ड़ेयरी उत्पादों तक पहुंच बढ़ाने की मांग भी कर रहा है। भारत जानता है कि ये मांगें मान ली गई तो भारत के किसान बर्बाद हो जाएंगे। हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन की जन्मशती के उपलक्ष्य में आयोजित सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने कहा कि मेरे देश के मछुआरों और पशु पालकों के हितों की रक्षा के लिए आज भारत तैयार है। हाल के वर्षों में बनाई गई नीतियां केवल सहायता के लिए नहीं, बल्कि किसानों में विश्वास पैदा करने के लिए हैं। मोदी के अनुसार ड़ॉ. स्वामीनाथन का मानना था कि जलवायु परिवर्तन और पोषण संबंधी चुनौतियों का समाधान उन्हीं फसलों में निहित है, जिन्हें भुला दिया गया है। उन्होंने दूसरी हरित क्रांति की अवधारणा पेश की। भारत जानता है कि ट्रंप के दबाव में नहीं झुकना आज के वक्त की सबसे बड़ी जरूरत है। एक के बाद एक देश ड़ोनाल्ड़ ट्रंप की टैरिफ मार के खिलाफ उठ कर खड़े.हो रहे हैंङ्क और ट्रंप के आगे न झुकने का साफ संदेश दे रहे हैं। भारत जानता है कि रूस, चीन ब्राजील जैसे ट्रंप विरोधी देशों के साथ संबंधों की मजबूती ही वक्त की जरूरत है। ब्राजील के साथ मोदी की बात हो चुकी है। रही बात रूस और चीन की तो भारत के साथ इन देशों के साथ मिल कर काम करने की कवायद तेजी से चल रही है। यही वक्त की मांग भी है।

चिंतन-मनन

उपयोगी हल

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा-सा राज्य था।एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़ पत्थर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए। कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली।

उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ। अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बबार्दी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया। यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

आवश्यकता है

आवश्यकता है दैनिक सब का सपना समाचार पत्र को उत्तर प्रदेश के समस्त जिलों में ब्लॉक स्तर, तहसील स्तर व जिला स्तर पर संवाददाताओं की इच्छुक अभ्यर्थी संपर्क करें या व्हाट्सएप करें।

9456884327/8218179552

विचार मंथनः देश में समस्याओं की भरमार और कांग्रेस की डिनर डिप्लोमेसी

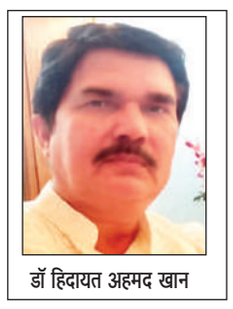

डॉ हिदायत अहमद खान

यह सच है कि हमारा प्यारा हिंदुस्तान आज समुद्र के गर्त में छुपे रहस्यों को जानने और चांद में क्या चल रहा है इसकी जानकारी वहीं पहुंचकर हासिल करने में सक्षम हो चुका है। यह हमारे वैज्ञानिक जगत की सफलता का चरम पक्ष है। इस गौरवमयी उपलब्धियों से हमें और आगे जाना है, क्योंकि आसमान नापना अभी भी दुनियां के कथिततौर पर चौधरी बनने वाले देशों के वश की भी बात नहीं। हॉ, भारत इसे पूरा करके जरुर दिखा सकता है। इसकी सीधी और सच्ची वजह यह है कि हमारी संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम की है। जो हमें सिखाती है कि पृथ्वी को परिवार मानकर विश्व का कल्याण करना सबसे महत्वपूर्ण है। पर यह सब तभी संभव होगा जबकि हम वैश्विक चुनौतियों से पहले अपने देश में मौजूद अजगर के समान बढ़ रहीं समस्याओं से निजाद पा लें। वर्तमान में देश कई जटिल समस्याओं और चुनौतियों से जूझ रहा है। इसमें सबसे बड़ी चुनौती देश में मौजूद आर्थिक असमानता है। देश का संपन्न वर्ग लगातार और धनवान होता चला जा रहा है, जबकि अधिकांश लोग गरीबी रेखा के ईद-गिर्द ही बने हुए किसी तरह से अपना जीवनयापन करते नजर आ रहे हैं। अमीर और गरीब के बीच की यह चौड़ी खाई यदि और बढ़ती है तो देश की सुख-शांति को भी यह खा सकती है। इसलिए इसका समाधान समय रहते करना ही होगा। इससे हटकर पढ़े-लिखे वर्ग में बेरोजगारी का जो प्रतिशत बढ़ रहा है वह भी गंभीर बात है। वहीं देश का प्रत्येक तबका बढ़ती महंगाई से परेशान नजर आ रहा है। शिक्षा और स्वास्थ्य की कमजोर व्यवस्था अपने आप में समस्या बनी हुई है। भ्रष्टाचार चरम पर है, रिश्वतखोरी बदस्तूर जारी है, अपराध का रेशो लगातार बढ़ रहा, जिसे आंकड़ों की बाजीगरी से घटाने की कोशिश भी की जा रही है। आतंकियों की घुसपैठ और आमजन के साथ ही हमारे जवानों का शहीद होना कोई छोटी-मोटी समस्या का हिस्सा नहीं है। इन सब में जलवायु संकट, कृषि संकट और लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति देशवासियों का घटता भरोसा किसी ज्वलंत समस्या से कम नहीं है। इन सब के लिए किसे दोषी ठहराया जाए, क्योंकि मुल्क के असली मालिकों ने यदि सत्ता चलाने के लिए स्थिर सरकारें दीं हैं तो सिर्फ इसलिए कि देश का कल्याण हो, न कि मनमर्जी से उन्हीं पर शासन करने के लिए बहाने-बहाने से कोड़े बरसाए जाएं। मौजूदा सरकार जिस विकास की बात कर रही है वह चंद लोगों के लिए है, जबकि देश की आमजनता उससे अछूती ही है। ऐसे में सभी राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी बन जाती है कि वो महज चुनावी जीत तक सीमित न रहें, बल्कि इन समस्याओं के समाधान की दिशा में ठोस नीतियां और कार्ययोजनाएं बनाएं। मगर अफसोस कि भारतीय राजनीति की दिखावटी एकजुटता भी असली मुद्दों से दूर नजर आ रही है। इनके पास ज्यादा सुर्खियां बटोरने वाले मुद्दे जो हैं, जिनके दम पर ये अपना हित साधने में लगे रहते हैं।

थोड़ी देर के लिए इन सब से हटकर विचार करें कि अमेरिका ने भारत पर अतिरिक्त 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने का एलान क्या किया, भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक रिश्तों में तनाव आ गया। इस मुद्दे पर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने जो कहा वह वाकई विचारणीय है। दरअसल उनका कहना है कि आज दुनिया में जो देश दादागिरी कर रहे हैं, वे ऐसा इसलिए कर पा रहे क्योंकि वे आर्थिक तौर पर मजबूत हैं और उनके पास बेहतर टेक्नोलॉजी है। ऐसे में उन्होंने निर्यात बढ़ाने और आयात घटाने का सजेशन दे दिया है। इस पर तो वो खुद भी अमल कर सकते हैं, क्योंकि वर्तमान सरकार का वो हिस्सा हैं। सरकार में रहते हुए नीतियां बनाना और उन्हें अमल में लाना आसान होता है, जबकि विपक्ष में रहते हुए सरकार के काम-काज की खामियां गिनाना आसान होता है, लेकिन उन्हें दूर करने के लिए रास्ता सुझाते हुए उसे मनवा लेना बहुत कठिन काम होता है। यह सच है कि हम आत्मनिर्भर बनकर दुनिया में अग्रणी भूमिका निभाते हुए विश्वगुरु का सच्चा तमगा हासिल कर सकते हैं, पर यह तभी संभव होगा जबकि राजनीतिक इच्छाशक्ति मजबूत होगी। इसी बीच खबर है कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे 11 अगस्त को इंडिया ब्लॉक के सांसदों को डिनर पार्टी देने जा रहे हैं। इससे पहले राहुल गांधी ने भी विपक्षी नेताओं को डिनर पर बुलाया था, जिसमें विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श किए जाने के साथ ही वोट चोरी मॉडल के खिलाफ लड़ने की शपथ भी ली गई थी। यदि यह डिनर डिप्लोमेसी इतनी ही कारगर साबित हो रही है तो इसे वाकई आगे भी जारी रखा जाना चाहिए, वर्ना यह नहीं भूलना चाहिए कि आज भी देश में एक तबका ऐसा मौजूद है जिसे दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो रही है। इस सिस्टम को सुधारने के साथ ही उसकी चिंता करने की भी आवश्यकता है।

विश्व पटल : ब्रिक्स की एकजुटता ट्रंप का जवाब

गिरीश पांड़े

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर एक बार फिर 25 प्रतिशत और टैरिफ लगाकर यानी कुल 50 प्रतिशत टैरिफ लगाकर साबित कर दिया है कि वे वाकई भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति से खौफ खाए हैं। यही नहीं, 25 प्रतिशत रेसिप्रोकल टैरिफ के बाद जो उन्होंने 25 प्रतिशत टैरिफ लगाया है, उसके पीछे का कारण भारत द्वारा रूस से तेल खरीदना बताया है। हालांकि टैरिफ की नई दरें 27 अगस्त से लागू होंगी लेकिन भारत ने उनकी टैरिफ चुनौती को दबाव की नीति कह कर उनकी ही भाषा में जवाब दे दिया है और अतिरिक्त शुल्क लगाने की अमेरिका की कार्रवाई को अनुचित, अन्यायपूर्ण और अविवेकपूर्ण बताया और कहा कि यह देश अपने हितों की रक्षा के लिए झुकने वाला नहीं है।

असल में अमेरिका को भारत-रूस मैत्री कभी रास नहीं आई। अतीत में भी वह रूस से ऊर्जा और हथियार खरीदने के मसले पर टकराव लेता रहा है। मौजूदा रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत द्वारा अपनाए गए रुख से भी वह नाराज है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इंस्टीट्यूट-जीटीआरआई-ने अमेरिका के फैसले को पाखंडपूर्ण बताया है और मॉस्को के साथ व्यापार के संबंध में अपने सहयोगियों और चीन के प्रति वाशिंगटन के चयनात्मक रवैये को उजागर किया है। वास्तव में ट्रंप के इस कदम का कोई तार्किक आधार नहीं है। अमेरिका का सबसे बड़ा व्यापार घाटा चीन से है (.295 अरब, 2024), जिस पर ट्रंप ने एक समय 145प्र. शुल्क लगाया था। लेकिन चीन ने दुर्लभ खनिज की आपूर्ति रोक दी तो ट्रंप को पीछे हटना पड़ा। अब चीन पर मात्र 30प्र. टैरिफ है, जबकि वह और तुर्की भी रूस से तेल आयात करते हैं। फिर भारत को दंड क्यों? इससे स्पष्ट होता है कि इस बार भारत के साथ ही अन्य ब्रिक्स देशों पर मनमाने टैरिफ लगाने के पीछे ट्रंप की मंशा कुछ और नजर आती है और वह ब्रिक्स, की बढ़ती ताकत से चिंतित हैं। ट्रंप अपने दूसरे शासनकाल से ही ब्रिक्स† को धमकी देते आए हैं। ब्रिक्स† जिसमें ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अखिका संस्थापक सदस्यों के अलावा उसमें जुड़े नये सदस्यों जैसे मिस्त्र, ईरान, सऊदी अरब, यूएई, इथियोपिया शामिल हैं। यह संगठन जहां दुनिया की लगभग आधी आबादी के साथ 30प्र. से अधिक वैश्विक जीडीपी को समेटे है और जिसमें भारत और चीन जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाएं शामिल हैं, वहीं यह वैश्विक दक्षिण का सशक्त मंच भी है, जो ऊर्जा, व्यापार, निवेश, तकनीक और वैकल्पिक वित्तीय ढांचे को भी बढ़ावा देता है। प्राकृतिक संसाधन, विशाल बाजार, भू-राजनीतिक संतुलन और सामूहिक आवाज इसकी प्रमुख ताकत हैं।

ब्रिक्स† से ट्रंप की चिंता मुख्यतः दो कारणों से है। उनकी पहली चिंता ब्रिक्स† द्वारा कॉमन करेंसी अपनाने की संभावना को लेकर है जिस बारे में वह ब्रिक्स को धमकी भी दे चुके हैं। दूसरी चिंता ब्रिक्स† द्वारा अंतरराष्ट्रीय सहयोग, बहुध्रुवीय और समावेशी विश्व व्यवस्था के निर्माण पर बल देने को लेकर है जिसकी शुरूोआत संयुक्त राष्ट्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन और बहुपक्षीय विकास बैंक जैसी वैश्विक संस्थाओं में व्यापक सुधार के साथ करने के लिए ब्रिक्स के सभी देशों ने आह्वान किया है और यहां ट्रंप को अमेरिकी चौधराहट को बरकरार रखने की चुनौती है।

लेकिन ट्रंप के इस टैरिफ कदम से ब्रिक्स में जो एकजुटता दिखाई दे रही है, उसे हम भविष्य के लिए शुभ संकेत कह सकते हैं। ब्राजील के साथ ही रूस, चीन तथा दक्षिण अफ्रीका जिस प्रकार से भारत के साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं, वह भारत के लिए भी अच्छी खबर कही जा सकती है। चीन ने भारत पर ट्रंप के टैरिफ को 'दबावपूर्ण' और अस्वीकार्य कहा, रूस ने इसे वैश्विक सहयोग रोकने में नाकाम संरक्षणवाद बताया और दक्षिण अखिका ने ब्रिक्स के भीतर मिल कर इसका जवाब देने पर जोर दिया।

भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की मास्को यात्रा और उसके बाद पुतिन की निकट भविष्य में भारत यात्रा तथा प्रधानमंत्री मोदी की 31 अगस्त से 1 सितम्बर, 2025 को चीन के टियांजिन में शंघाई सहयोग संगठन की 25वीं बैठक में भाग लेने से भी भारत-चीन-रूस के बीच त्रिपक्षीय वार्ता की फिर से शुरूोआत हो सकती है। इस प्रकार ब्रिक्स की एकजुटता को शायद ही ट्रंप प्रभावित कर सकें। ऐसा होता है तो यह न केवल ब्रिक्स के लिए, बल्कि संपूर्ण विश्व समुदाय के लिए हितकर होगा।

अमेरिकी दादागिरी पर मोदी की ललकार

देश के अग्रणी कृषि वैज्ञानिक एवं कृषि-क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसान हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए ललकारभरे शब्दों में अमेरिकी टैरिफ पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि भारत किसानों के हितों से समझौता नहीं करेगा, भारत की बढ़ती वैश्विक ताकत का द्योतक है। ट्रंप प्रशासन द्वारा लगाए गए टैरिफ को भारत ने अनुचित एवं दुर्भावनापूर्ण बताया है। भारत अमेरिकी कृषि उत्पादों के लिए बाजार खोलने के दबाव कभी नहीं आयेगा क्योंकि भारत के लिये यह एक राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दा है। इस समारोह में मोदी ने जो शब्द कहे, वे केवल एक श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि नये भारत, सशक्त भारत की एक स्पष्ट नीति का घोषणा पत्र है, भारत की नई कृषि रणनीति, आत्मनिर्भरता की भावना और अमेरिकी टैरिफ की दादागिरी को खुली चुनौती है। भारत अब पीछे हटने वाला नहीं है और दुनिया की कोई भी ताकत उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिकी टैरिफ पर पहली बार प्रतिक्रिया दी, और अमेरिका या डॉनल्ड ट्रंप का नाम लिए बगैर कहा कि किसानों, पशुपालकों और मछुआरों के हितों के साथ भारत कभी समझौता नहीं करेगा। भारत ने इससे पहले ट्रंप के 50 प्रतिशत टैरिफ को अनुचित, अन्यायपूर्ण और तर्कहीन बताया था। यह विडम्बनापूर्ण एवं विसंगतिपूर्ण है कि ट्रंप बातें रूस की कर रहे हैं, लेकिन यह समझना आसान है कि उनकी निराशा के मूल में भारत के साथ अटकी कृषि ट्रेड डील भी है। वह चाहते हैं कि भारत अमेरिकी कृषि उत्पादों और डेयरी प्रॉडक्ट्स के लिए अपना बाजार खोले। लेकिन देश की बड़ी आबादी खेती पर आश्रित है और किसान आर्थिक रूप से सशक्त नहीं हैं। इसलिये वे सब्सिडाइज्ड अमेरिकी प्रॉडक्ट्स से होड़ नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण के जरिये भारत का यही पक्ष एवं किसानों की चिन्ता को रखा है। लेकिन ट्रंप इस चिंता को शायद ही समझें, क्योंकि अब ऐसा लग रहा है कि अपनी हर नाकामी का ठीकरा फोड़ने के लिए उन्हें कोई देश चाहिए। अमेरिका में बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी का दबाव व यूक्रेन युद्ध न रुकवा पाने की हताशा ट्रंप के फैसलों में बौखलाहट के रूप में झलक रही है। पहले उन्होंने चीन पर दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन जब वहां से 'रेयर अर्थ मिनरल्स' के रूप में झटका लगा, तो भारत और रूस से अपनी बात मनवाना चाहते हैं।

हाल ही में अमेरिका द्वारा भारतीय कृषि उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाने की घोषणा को प्रधानमंत्री मोदी ने न केवल अनुचित और एकतरफा करार दिया, बल्कि यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब वैश्विक मंच पर दबाव में आने वाला नहीं है। अमेरिका की यह टैरिफ नीति, डब्ल्यूटीओ के सिद्धांतों के विरुद्ध और विकासशील देशों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार का प्रतीक है। भारत पर विशेषकर चावल, गेहूं, दलहन, और मसालों के निर्यात में टैरिफ लगाना सीधे-सीधे भारतीय किसानों की आय पर प्रहार है। ऐसे समय में जब भारत कृषि निर्यात को बढ़ावा देकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बना रहा है, अमेरिका की यह नीति दादागिरीपूर्ण व्यापारवाद का उदाहरण है। भले ही ट्रंप की टैरिफ पैंतरों ने दुनिया के सामने एक बड़ी चुनौती खड़ी कर दी हो, लेकिन भारत ऐसी चुनौतियों के सामने झुकने वाला नहीं है।

भारत अब केवल अमेरिका या यूरोप पर निर्भर नहीं रहना चाहता। अफ्रीका, खाड़ी देशों, दक्षिण एशिया और पूर्वी एशियाई देशों के साथ द्विपक्षीय कृषि व्यापार समझौते तेजी से किए जा रहे हैं। स्थानीय उत्पादन का प्रोत्साहन, 'मेक इन इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' के तहत कृषि प्रसंस्करण इकाइयों को बल दिया जा रहा है, जिससे निर्यात योग्य उत्पादों का मूल्यवर्धन हो सके। डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन, तकनीक के माध्यम से किसानों को वैश्विक बाजार की जानकारी, टैरिफ डाटा और निर्यात संभावनाओं से जोड़कर किसानों की ताकत को बढ़ाया जा रहा है। भारत टैरिफ के जवाब में टैरिफ की राह पर बढ़ते हुए यदि आवश्यकता पड़ी, तो प्रतिस्पर्धी टैरिफ नीति के तहत अमेरिकी उत्पादों पर शुल्क बढ़ाने से नहीं हिचकिचाएगा। भारत डब्ल्यूटीओ और जी20 आदि मंचों पर आक्रामक कूटनीति का सहारे लेकर अब विकासशील देशों की आवाज बनकर, अमेरिका की एकतरफा नीतियों का जवाब दे रहा है।

देश को धीरे-धीरे समझ आने लगा है कि भारतीय कृषि व डेरी क्षेत्र में अमेरिकी उत्पाद खपाने के लिये ही डोनाल्ड ट्रंप टैरिफ आंतक फैला रहे हैं। यही वजह है कि पहले संयम दिखाने के बाद भारत ने निरंकुश ट्रंप सरकार को चेता दिया है कि भारतीय किसानों व दुग्ध उत्पादकों के हितों की बलि नहीं दी जा सकती। हमारे लिये यह देश की एक बड़ी कृषि व डेरी उद्योग से जुड़ी आबादी के जीवन-यापन का भी प्रश्न है। बहरहाल, यह तय हो गया है कि भारत वाशिंगटन के उन मंसूबों पर पानी फेरने के लिये खड़ा हो गया है, जिनके तहत अमेरिका मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम और इथेनॉल जैसे उत्पादों से कम टैरिफ के साथ भारत के बाजार को पाटना चाहता है। निस्संदेह, भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले तीन प्रमुख क्षेत्रों कृषि, डेरी फार्मिंग और मत्स्य पालन से जुड़े करोड़ों लोगों की अजीविका की रक्षा करने के लिये प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता सराहनीय है।

एम.एस. स्वामीनाथन का नाम आते ही भारतीय कृषि का वह स्वर्णिम अध्याय सामने आता है, जब देश अन्न के लिए विदेशों पर आश्रित था और अकाल एक आम त्रासदी हुआ करती थी। 1960 के दशक में स्वामीनाथन ने नॉर्मन बोरलॉग के साथ मिलकर उच्च उपज वाली किस्मों (एचवाईवी), उर्वरकों और सिंचाई तकनीक का ऐसा संगम किया जिसने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना दिया। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शुरू हुई हरित क्रांति ने न केवल खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित की, बल्कि भारत की कृषि पहचान को वैश्विक पटल पर स्थापित किया। उनकी रिपोर्टें, विशेष रूप से स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें, आज भी किसानों की आय दोगुनी करने और उन्हें बाजार से न्याय दिलाने की कुंजी मानी जाती हैं। उन्होंने 'किसान केंद्रित कृषि नीति' का विचार दिया, जिसमें किसानों को केवल उत्पादनकर्ता नहीं, बल्कि राष्ट्रनिमार्ता माना गया। मोदी इसी नीति को आगे बढ़ाते हुए न केवल किसानों के हितों के साध रहे हैं, बल्कि भारतीय कृषि को नये भारत का आधार बनाने के लिये संकल्पबद्ध है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि भारतीय राजनीति में किसान उत्पादक व उपभोक्ता से इतर बड़ा राजनीतिक घटक भी है। ऐसे में जाहिर है कि प्रधानमंत्री मोदी कृषक समुदाय को किसी भी कीमत पर नाराज नहीं करना चाहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी का जोर अब 'अन्नदाता को ऊजार्दाता' बनाने पर है। इसके लिए कृषि के तीन प्रमुख मोर्चों पर काम हो रहा है- न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को अधिक न्यायसंगत और पारदर्शी बनाना। कृषि निर्यात को 50 बिलियन डॉलर से ऊपर ले जाना। स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को चरणबद्ध लागू करना, जिससे किसानों को लागत से 50 प्रतिशत अधिक लाभ मिल सके। आज जब हम एम.एस. स्वामीनाथन की वैज्ञानिक दृष्टि को याद करते हैं, तो स्पष्ट होता है कि उनकी सोच सिर्फ उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं थी, बल्कि किसान को सशक्त करने, आत्मनिर्भर बनाने और वैश्विक ताकतों के सामने टिके रहने योग्य बनाने की थी। मोदी की यह नई नीति उसी दर्शन की राजनीतिक अभिव्यक्ति है।

सही मायनों में भारतीय कृषि में उन आमूल-चूल परिवर्तनों की आवश्यकता है जो न केवल किसान की आय बढ़ाएं बल्कि कृषि उत्पादों को विश्व बाजार की चुनौतियों से मुकाबला करने में भी सक्षम बनायें। एक सौ चालीस करोड़ आबादी वाला देश भारत दुनिया में सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश है। इस आबादी की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना भी देश की प्राथमिकता होनी चाहिए। ऐसे में हरित क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम हर हालात में मेहनतकश अन्नदाता को पूरे दिल से समर्थन दें। भारत अब 'झुककर व्यापार' नहीं करेगा, बल्कि 'सम्मान के साथ साझेदारी' करेगा। अमेरिका जैसे देशों को यह समझना होगा कि भारतीय किसान अब केवल हल चलाने वाला नहीं, बल्कि वैश्विक बाजार का खिलाड़ी है। और जब उसके पीछे स्वामीनाथन की विरासत और मोदी की नेतृत्वशक्ति हो, तो कोई भी टैरिफ, कोई भी दबाव, भारत की कृषि शक्ति को झुका नहीं सकता।

हर घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत 13 से 15 अगस्त के मध्य होगा ध्वजारोहण समारोह का आयोजन

अमरोहा (सब का सपना):- जिलाधिकारी निधि गुप्ता वत्स ने कहा कि हर घर तिरंगा कार्यक्रम को लेकर सभी विभागों की जिम्मेदारी तय की गई है। स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर अभियान के तीसरे चरण में 13 से 15 अगस्त के बीच हर-घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत ध्वजारोहण समारोह का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिले में 03 लाख से अधिक तिरंगा फहराए जाएंगे। जिले में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हर घर तिरंगा कार्यक्रम की सफलता के लिए डीएम ने कहा कि इसमें सभी विभागों की भूमिका अहम होगी। डीएम ने निर्देशित किया कि हर-घर तिरंगा आयोजन में सभी विभाग भागीदारी निभाएंगे। कार्यक्रम को सफल बनाने की जिम्मेदारी सभी विभागों के अधिकारियों को सौंपी गई है। इस दौरान जिले भर में 03 लाख से अधिक झंडा फहराने का लक्ष्य तय किया गया है। इसमें नगर पालिका, निकायों से लेकर ग्राम पंचायतों तक को शामिल किया गया है। उन्होंने कहा कि हर नागरिक को अपने घर और शासकीय व व्यावसायिक प्रतिष्ठान पर तिरंगा फहराने के लिए प्रेरित करते हुए कार्यक्रम की सफलता के लिए व्यापक प्रचार प्रसार किया जाए। डीएम ने कहा कि यदि किसी के पास झण्डा रखा है और वह सुरक्षित है तो उसका प्रयोग कर सकता है। स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के माध्यम से झण्डों का निर्माण कराया जा रहा है। शासन द्वारा झण्डा तैयार करने के सम्बन्ध में जारी एसओपी के माध्यम से बताया गया है कि झण्डे का आकार आयताकार होना चाहिए, लम्बाई एवं चौड़ाई में 3 अनुपात 2 होना चाहिए।

झण्डा बनाने के लिए खादी, हाथ एवं मशीन से बने हुए सूती, पॉलिस्टर, ऊनी, सिल्क कपड़े का प्रयोग किया जा सकता है। झण्डे के तीन रंगों में सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और नीचे हरे रंग के प्रयोग के साथ ही सफेद पट्टी में 24 तीलियों वाले अशोक चक्र को बाद में प्रिंट किया जाना अनिवार्य किया गया है। अभियान की महत्ता को समझते हुए सभी शासकीय कार्यालयों में खादी का झण्डा स्थापित किया जाए और कार्यक्रम के उपरान्त पूर्ण सम्मान के साथ झण्डे को उतारकर सुरक्षित रखा जाना सुनिश्चित किया जाए।

झण्डा फहराने के नियम:

प्रत्येक नागरिक को आवास, स्कूल, सरकारी कार्यालयों में झण्डा सम्मान के साथ ध्वज संहिता का अनुपालन करते हुए फहराना है। राष्ट्रध्वज फहराते समय केसरिया पट्टी झण्डे में ऊपर की ओर होनी चाहिए। झण्डा यदि सरकारी परिसर में फहराया जाता है तो सूर्योदय के उपरान्त ध्वजारोहण किया जाना चाहिए और सूर्यास्त के साथ पूरे सम्मान के साथ उतारना चाहिए। निजी आवासों एवं प्रतिष्ठानों पर लगाए जाने वाले झण्डों को निर्धारित समयावधि के उपरान्त पूर्ण आदरभाव एवं सम्मान के साथ उतारकर सुरक्षित रखा जाएगा। हर घर पर झण्डा सही तरीके से लगाया जाना चाहिए। आधा झुका, कटा या फटा झण्डा किसी भी दशा में न लगाया जाए। जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से अपील करते हुए कहा है कि हर घर तिरंगा कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय ध्वज संहिता अक्षरशः अनुपालन करते हुए तिरंगे को स्थापित किया जाए। कार्यक्रम के उपरान्त झण्डे को स्मृति चिन्ह के रूप में सुरक्षित रखें, ताकि आने वाली पीढ़ी अपने पूर्वज को राष्ट्रप्रेम से जुड़ा हुआ महसूस करते हुए स्मृतियों में आपको याद कर सके। अभियान के तीसरे चरण में 13 से 15 अगस्त 2025 के मध्य सभी शासकीय भवनों, शैक्षणिक संस्थानों, होटलों, कार्यालयों, बांधो, पुलों आदि पर ध्वजारोहण समारोह और तिरंगा प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने आमजनमानस से अपील करते हुए कहा कि सम्पूर्ण कार्यक्रम के दौरान सेल्फी, झण्डे के साथ फोटो, झण्डा गीत एवं देशभक्ति गीत के फोटो-वीडियो वेबसाइट www.harghartiranga.com पर अपलोड करें।

इनर व्हील क्लब द्वारा मां तथा शिशु के बेहतर स्वास्थ्य की जानकारी दी गई

हसनपुर/अमरोहा (सब का सपना)जावेद चौधरी:- शनिवार को इनर व्हील क्लब के सदस्यों द्वारा सरकारी अस्पताल चिकित्सक एवं अन्य स्टाफ के साथ जच्चा बच्चा एवं गर्भवती स्त्रियों को मां तथा शिशु के बेहतर स्वास्थ्य की जानकारी दी गई। स्तनपान को बढ़ावा देने के लिए इनर व्हील क्लब द्वारा सरकारी अस्पताल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। क्लब की ओर से सभी उपस्थित गर्भवती महिलाओं को दलिया, बिस्किट, दाल, ब्रेड, दूध आदि देकर उन्हें स्वस्थ्य रहने के बारे में बताया गया। उन्हें ऐसी स्थिति में कौन सा आहार लेना चाहिए उसके विषय में विस्तार से जानकारी दी गई। जिसमें सभी गर्भधारण करने वाली महिलाओं को शिशुओं के स्तनपान के फायदे बताए गए। वहीं क्लब सदस्यों ने अस्पताल स्टाफ को सहयोग करने के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर क्लब अध्यक्षा आरती गुप्ता, सचिव सोनिया रस्तोगी, एडिटर कविता अग्रवाल, आइसो शालिनी अग्रवाल, प्रियंका गर्ग, सुनीता अग्रवाल, अंचल अग्रवाल समेत अन्य महिलाएं मौजूद रहीं।

मुस्लिम बहन ने बांधी हिंदू भाई के हाथ में राखी, लिया सुरक्षा का वचन

हसनपुर/अमरोहा (सब का सपना):- नगर क्षेत्र में शाहजहां ने मुकेश गुप्ता के राखी बांधकर अपनी सुरक्षा का वचन लिया है। रक्षाबंधन का त्योहार शनिवार को पूरे पारंपरिक तरीके व खुशी से मनाया गया। बहनों ने भाई के कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर रक्षा करने का वचन लिया। भाइयों ने भी अपनी इच्छा के अनुसार बहनों को उपहार दिया। रक्षाबंधन के दिन शनिवार की सुबह से ही बहनें अपने भाइयों के घर पहुंचने लगी थीं। वहीं भाई भी बहनों से राखी बंधवाने के लिए सुबह से ही घर से निकल पड़े थे। इसी क्रम में शाहजहां पत्नी अली अहमद सैफी मोहल्ला काला शहीद, हसनपुर की निवासी हैं। हिंदू मुस्लिम एकता की मिसाल कायम कर 27 साल से निरंतर मुकेश गुप्ता के राखी बांधती हैं।

भाइयों की कलाई पर बहनों ने बांधी राखी, रक्षाबंधन पर भाइयों ने लिया रक्षा का संकल्प

अमरोहा (सब का सपना) रोहित कुमार:- शनिवार को रक्षाबंधन का त्यौहार जिलेभर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बहनों ने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर उनकी लंबी उम्र और खुशहाली की कामना की। भाइयों ने भी बहनों को उपहार देकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया। बहन-भाई के प्यार का प्रतीक इस त्योहार को लेकर घर-घर में व्यापक तैयारियां की गई थी। शनिवार की सुबह लोग स्नान कर देवी देवताओं की पूजा अर्चना किया। इसके उपरांत बहनों ने भाइयों की कलाई में रक्षा सुत बांधकर जन्म जन्म तक सुख-दुःख में साथ निभाने का वचन भाईयों

से लिया। वहीं भाईयों ने भी बहनों को उपहार देकर हमेशा साथ निभाने का वादा किया। इस दौरान मुंह मीठा करने का दौर भी जारी रहा। घर के बुढे- बुजुर्गों का पैर छुकर आशिर्वाद लिया। दोपहर में अधिकांश बहनों ने भाई की कलाई पर राखी सजाई और उपहार पाकर अपनों के साथ खुशियां मनाई सुबह से शुरू हुआ रक्षाबंधन का त्यौहार रात तक चलता रहा। रक्षाबंधन पर सबसे ज्यादा एक्साइटेड बच्चे रहे सुबह से ही भाई-बहन इसे लेकर हालचाल करते नजर आए। इसके अलावा मिलने वाले उपहारों का इंतजार बच्चों को रहा। साथ ही मनपसंद के पकवान और घूमने जाने का मौका भी बच्चों के लिए रोमांच भरा था रक्षाबंधन पर सबसे ज्यादा खुश बच्चे ही नजर आए। ईश्वर पूजन के बाद भाई को तिलक मिष्ठान पूजन नारियल रुमाल के साथ बहन ने राखी बांधी। इस मौके पर बच्चों में विशेष उत्साह देखने को मिला। भाई और बहन के इस विशेष त्योहार को लेकर अधिकांश घरों में बहनों ने शुक्रवार की रात में प्लानिंग कर ली थी जिससे सुबह होते की त्योहार की धूम घरों में नजर आने लगी थी।

विधायक पुत्र ने लिया बाढ़ प्रभावित गांवो का जायजा

हसनपुर/ अमरोहा (सब का सपना):- विधानसभा 42 के विधायक महेंद्र सिंह खड्गवंशी के पुत्र देवेंद्र सिंह खड्गवंशी ने रविवार को बाढ़ से प्रभावित गांव का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने विधानसभा क्षेत्र के गांव गंगानगर, सिरसा, दयावली खालसा, सतेडा आदि गांव में बाढ़ खंड अधिकारियों एवं तहसीलदार हसनपुर के साथ ग्रामीणों के बीच मौके पर पहुंचे और मौजूद लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं को समझा। वहीं इस दौरान विधायक पुत्र ने बाढ़ राहत चौकिया का भी निरीक्षण किया। इस दौरान विधायक पुत्र ने कहा की बाढ़ के कारण ग्रामीणों, किसानों का काफी नुकसान हुआ है। हम क्षेत्र के लोगों के साथ हर दुख सुख के प्रति हर एक क्षण उनके साथ खड़े हैं।

यूपी में अब शिक्षित दिव्यांग नहीं रहेंगे बेरोजगार, सभी को मिलेगी नौकरी; सिर्फ करना होगा ये काम

अमरोहा। अब पढ़े-लिखे दिव्यांग बेरोजगार नहीं रहेंगे। उनको रोजगार की मुख्य धारा से जोड़ने का काम किया जाएगा। दिव्यांगों को योग्यता के अनुसार नौकरी मिलेगी। जिसकी शुरूआत हो चुकी है। शिक्षित दिव्यांगजन साक्षात्कार के जरिए प्रतिष्ठित कंपनियों में नौकरी पाएंगे। साक्षात्कार के जरिए उनका चयन किया जाएगा। इसके लिए सोमवार से दिव्यांगजन रोजगार अभियान शुरू होगा और 13 अगस्त तक चलेगा। जिसके तहत अलग-अलग तिथि पर शिविरों का आयोजन होगा। उनमें ही दिव्यांगों का रोजगार के लिए चयन होगा। जनपद में करीब आठ हजार दिव्यांग पेंशनधारी हैं। इनमें से तमाम दिव्यांग शिक्षित हैं। लेकिन, रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं या फिर घरों पर ही बैठे हुए हैं। अब वह खाली नहीं बैठेंगे। यदि कोई दिव्यांग कौशल विकास या आईटीआई प्रशिक्षित है या फिर अन्य योग्यताधारी है, उनको प्रशासन स्थानीय प्रतिष्ठानों

में नौकरी दिलवाने का कार्य करेगा। इसके लिए दिव्यांगजन रोजगार अभियान शुरू किया गया है। सोमवार यानी 11 अगस्त से अभियान के तहत शिविरों का आयोजन होगा। पहला शिविर नारायणी स्वरूप दया निजी आईटीआई नारंगपुर जोया में सुबह साढ़े दस बजे लगेगा। दूसरा शिविर 12 अगस्त की सुबह साढ़े दस बजे से उ.प्र. कौशल विकास मिशन प्रशिक्षण केंद्र निकट फायर स्टेशन गजरौला में आयोजित होगा और तीसरा शिविर 13 अगस्त की सुबह साढ़े दस बजे राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान गंगेश्वरी ग्राम रहरई में लगेगा। इसमें बेरोजगार दिव्यांगजन जो रोजगार के इच्छुक हैं, अपने शैक्षणिक अभिलेखों के साथ उपस्थित होकर साक्षात्कार के जरिए नौकरी हासिल कर सकते हैं।

अमरोहा: रक्षाबंधन पर जाम मुक्त शहर बनाने में टीएसआई अनुज कुमार मलिक की मेहनत

अमरोहा (सब का सपना) रोहित कुमार:- ज़िले में रक्षाबंधन का पवित्र पर्व, जो भाई-बहन के अटूट रिश्ते का प्रतीक है, इस बार अमरोहा जिले में विशेष रूप से यादगार रहा। इस अवसर पर शहर की सड़कों को जाम मुक्त रखने के लिए यातायात पुलिस ने दिन-रात एक कर दिया। इस अभियान में ट्रैफिक सब-इंस्पेक्टर (टीएसआई) अनुज कुमार मलिक ने अपनी मेहनत और लगन से सभी का ध्यान खींचा। उनकी अगुवाई में यातायात पुलिस और नगर पालिका परिषद की संयुक्त टीम ने रक्षाबंधन के दिन शहर को सुगम और व्यवस्थित बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। रक्षाबंधन के दिन अमरोहा शहर में भारी भीड़ और वाहनों की आवाजाही की संभावना को देखते हुए पुलिस अधीक्षक (एसपी) अमित कुमार आनंद ने विशेष निर्देश जारी किए थे। इन निदेशों के तहत टीएसआई अनुज कुमार मलिक ने शहर के प्रमुख चौराहों और सड़कों पर यातायात व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए व्यापक योजना बनाई।

सुबह से ही वह अपनी टीम के साथ सड़कों पर तैनात थे, ताकि बहनें अपने भाइयों के पास समय पर पहुंच सकें और पर्व का आनंद बिना किसी परेशानी के उठा सकें। शहर की मुख्य सड़कों, जैसे आजाद रोड, टीपीनगर चौराहा, और जोया ओवरब्रिज, जहां अक्सर जाम की स्थिति बन जाती है, वहां विशेष ध्यान दिया गया। कैलसा बाईपास पर चल रहे निर्माण कार्य के कारण वाहनों का दबाव शहर की सड़कों पर बढ़ गया था। इस स्थिति में टीएसआई अनुज कुमार मलिक ने न केवल यातायात को डायवर्ट करने की रणनीति बनाई, बल्कि सड़कों पर तैनात पुलिसकर्मियों और होमगार्ड्स को स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए। उनकी सक्रियता के कारण वाहन चालकों को वैकल्पिक मार्गों की जानकारी दी गई, जिससे जाम की स्थिति को काफी हद तक नियंत्रित किया गया।

लखनऊ में उत्तर प्रदेशीय माध्यमिक शिक्षक संघ के पदाधिकारी की कार्यकारिणी बैठक का आयोजन

अमरोहा (सब का सपना) रोहित कुमार:- लखनऊ स्थित डी0 ए0 वी0 डिग्री कॉलेज लखनऊ के सभागार में आयोजित प्रदेश पदाधिकारियों, मण्डलीय अध्यक्ष, मंडलीय मंत्री, पूर्व विधायक, सदस्य प्रदेश कार्यकारिणी तथा राज्यपरिषद की बैठक संगठन के प्रदेशीय अध्यक्ष सुरेश कुमार त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में संगठनात्मक समीक्षा के साथ साथ आगामी 20 अगस्त 2025 को शिक्षकों की समस्याओं को लेकर पूरे प्रदेश में एक साथ जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालयों पर होने वाले धरना प्रदर्शन की चर्चा की गई। बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेशीय अध्यक्ष सुरेश कुमार त्रिपाठी ने कहा कि सरकार शिक्षकों की जायज मांगों को लगातार अनदेखा कर रही है। मांगे न मानी जाने के कारण शिक्षक बहुत चिन्तित है, जिससे शिक्षकों में रोष पनप रहा है। धारा 12, 18 और 21 को अभी तक शामिल नहीं किया गया है। पुरानी पेंशन पर भी सरकार अपना

रुख शिक्षकों से दूर किये हुए है। ऑफ लाइन स्थानांतरण को निस्तारित करने को संगठन को आश्वस्त करने के बाद भी अभी तक नही किये हैं, अगर नही करने थे तो अधिकारियों द्वारा अग्रसारित क्यों किये गए और एक निश्चित तारीख तक निदेशालय में क्यों जमा किये गए। शीघ्र ही ऑफ लाइन स्थानांतरण किये जायें, एन पी एस से ओ पी एस में आये शिक्षकों के अंशदान को जी0पी0एफ की प्रक्रिया पूरी की जाए, अवशेष एरियर, चयन, प्रोन्नत आदि शिक्षकों की अन्य समस्याओं को लेकर आगामी 20 अगस्त को सभी जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालयों पर विशाल धरना प्रदर्शन किया जाएगा और शिक्षकों की प्रमुख समस्याओं से संबंधित ज्ञापन मुख्यमंत्री को संबोधित होगा, जिला विद्यालय निरीक्षक को सौंपा जाएगा। विधान परिषद में शिक्षक विधायक दल के नेता ध्रुव कुमार त्रिपाठी ने प्रदेशभर के सभी शिक्षकों का आव्हान किया कि अपनी मांगों को मनवाने के लिए आगामी 20 अगस्त 2025 को जनपद स्तर पर प्रत्येक विद्यालय का एक एक शिक्षक धरने

में अपनी प्रतिभागिता अनिवार्य रूप से करे। धरना स्थल पर अपनी हाजिरी अपने वजूद को बचाने और आपकी एकता की ताकत के लिए बहुत जरूरी है। अन्यथा की स्थिति में सरकार का रुख आप सब देख ही रहे हैं। प्रदेशीय मंत्री डॉ0 जी0 पी0 सिंह ने कहा कि चाहे वे समस्याएं सामूहिक हो या व्यक्तिगत, हर शिक्षक परेशान है। अपने अस्तित्व की लड़ाई के लिए शिक्षक को निकलना होगा और अपनी एकता के बल पर अपनी समस्यायों का समाधान कराना होगा। वह घर बैठ कर ये न देखे की संगठन क्या कर रहा है। बल्कि खुद को संगठन से जोड़ते हुए आगे आना होगा। ये धरना बहुत ही महत्वपूर्ण है। जनपद की प्रत्येक शाखा से प्रत्येक शिक्षक को धरने में शिरकत करके धरने को सफल बनाना है। बैठक का संचालन प्रदेशीय महामंत्री नरेन्द्र कुमार वर्मा जी ने किया। लखनऊ प्रदेश की बैठक से लौटते हुए प्रदेशीय मंत्री डॉ0 जी0 पी0 सिंह, सदस्य प्रदेश कार्यकरिणी अतुल कुमार शर्मा और जिलामहामंत्री बालक राम ने यह जानकारी दी।

मेला ग्राउंड में दुकानों और स्टॉलों का किया आवंटन

चंदौसी/संभल। (हनी चन्द्रा) सब का सपना:- रविवार को मेला गणेश चौथ के 65वें महोत्सव के आयोजन को लेकर 25 अगस्त से 14 सितम्बर तक लगने वाले मेले के लिये दुकानों और स्टालों का आवंटन मेला समिति पदाधिकारियों द्वारा किया गया। मेला इंचार्ज रविन्द्र गुप्ता रूपी ने बताया कि मेले के ग्राउंड को दुकानों और स्टालों के लिये 16 ब्लॉकों में जैसे- सरस्वती ब्लॉक, दुर्गा ब्लॉक लक्ष्मी ब्लॉक, विष्णु ब्लॉक, कृष्ण ब्लॉक, राधा ब्लॉक, राम ब्लॉक, सीता ब्लॉक, नारद ब्लॉक, शंकर ब्लॉक, पार्वती ब्लॉक,

गणेश ब्लॉक, हनुमान ब्लॉक, रिद्धि सिद्धि ब्लॉक में बाटा गया हैं। जिसके अनुरूप आज दूरदराज से आने वाले दुकानदारों को उनकी आवश्यकता नुसार जगह उपलब्ध कराने के लिये दुकानों और स्टॉलों का आवंटन किया गया, मेला ग्राउंड में कुल 352 दुकानें हैं तथा 35 दुकान सरकारी प्रदर्शनी की होंगी। देर शाम तक 276 दुकानों का आवंटन न्यूनतम मूल्य पर हुआ। इसबार मेले में कर्नाटक कैफे के साउथ व्यंजन, राजस्थानी कपड़ा और जूती तथा बच्चों के लिए जर्मन क्ला 'पंजा' आदि के विशेष स्टॉल लगेंगे। मेले के खेल गांव में विभिन्न प्रकार के झूले आकर्षण का केन्द्र होगें। साथ ही मेला समिति सदस्य मनोज गुप्ता मीनू ने बताया कि जिला प्रशासन के आदेशानुसार दुकानदारों से आवश्यक दिशानिर्देश स्वरूप शपथ पत्र जमा किए गए। जिसमें प्रत्येक दुकानदार को अग्नि अवरोधक नियंत्रक रखना आवश्यक होगा, मेले प्लास्टिक और डिस्पोजल पूर्णत वर्जित रहेगी, कूड़ा कूड़ादान में डालें दुकान के आगे सफाई रखें जिससे मेला स्थल साफ स्वच्छ रहे, बाल श्रमिक पूर्णतः वर्जित रहेगे। इस दौरान मेला परिषद से मुख्य सचिव हरिगोपाल वार्ष्णेय, ललित किशोर गुप्ता, सुधीर गुप्ता, रविन्द्र कुमार रूपी, मनोज कुमार मीनू, डॉ० राजीव गुप्ता, प्रजीत कुमार लालू, मेजर शशिकांत गुप्ता, प्रभात कृष्णा, सतेंद्र मामा, मुकेश ब्रेड, एड० लोकेन्द्र शर्मा, संजय कुमार बब्बू, अभिषेक गुप्ता अप्पू, आशुतोष वार्ष्णेय, शुभम अग्रवाल, संजीव कुमार मौजूद रहे।

श्री नारायण सेवा समिति आयोजित करेंगी कला प्रतियोगिता

चंदौसी/संभल (हनी चन्द्रा) सब का सपना:- श्री नारायण सेवा समिति चंदौसी द्वारा इस वर्ष की कला प्रतियोगिता 17 अगस्त दिन रविवार को नगर के विभिन्न केंद्रों पर आयोजित की जाएगी । संपूर्ण प्रतियोगिता कक्षा 3 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए चार वर्गों में विभाजित की गई है। कक्षा 3 से 5 के प्रथम वर्ग में हमारा तिरंगा झंडा या जल बचाओ, कक्षा 6 से 8 के द्वितीय वर्ग में वंशीवादक श्रीकृष्ण या वर्षा का दृश्य, कक्षा 9 व 10 के तृतीय वर्ग में स्वच्छता अपनाओ - रोग भगाओ या सबसे ऊंचा पुल-चिनाब और कक्षा 11व 12 के चतुर्थ वर्ग में ऑपरेशन सिंदूर या वृक्षारोपण अभियान निश्चित किया गया है। प्रत्येक वर्ग में कोई से एक विकल्प का चित्रण करके अपने मनपसंद रंग भरने हैं। प्रतियोगिता की अवधि 90 मिनट रहेगी। समस्त विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को प्रार्थना पत्र के साथ नमूना पत्रक भेजे जा चुके हैं । विद्यार्थियों द्वारा आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 11 से बढ़ाकर 13 अगस्त 2025 कर दी गई है । यह जानकारी यहां समिति के प्रबंधक हरीश कठेरिया 'एड.' के द्वारा दी गई ।

राज्य निर्वाचन आयुक्त लखनऊ ने खारिज किये राहुल गांधी द्वारा लगाये गये वोटर लिस्ट में धांधली के आरोप

बहजोई/संभल (सब का सपना):- राज्य निर्वाचन आयुक्त ने राहुल गांधी द्वारा वोटर लिस्ट में गड़बड़ी किये जाने के आरोपों का खंडन किया। उन्होंने कहा कि ऐसी किसी प्रकार की कोई गड़बड़ी नहीं पाई गई। राहुल गांधी द्वारा की गई प्रेस कांफ्रेस में लगाये गये आरोप पूरी तरह से मिथ्या हैं। बता दें कि नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा गुरुवार को दि फाउंडेशन ऑफ द कंसिट्यूशन इज द वोट, वोट हेजबीन डिस्कॉयर्ड विषयक एक प्रेस कांफ्रेंस की गयी जिसमें अन्य विषयों के साथ-साथ उत्तर प्रदेश राज्य का भी जिक्र किया गया जिसमें उनके द्वारा तथ्य रखा गया कि दो मतदाता जिनका नाम आदित्य श्रीवास्तव पुत्र एस०पी०श्रीवास्तव (इपिक नं० एफपीपी 6437040) एवं विशाल सिंह पुत्र महीपाल सिंह (इपिक नं० आईएनबी 272 2288) हैं। इनका नाम उ०प्र० के साथ-साथ अन्य प्रदेश की विधान सभाओं की मतदाता सूची में भी अंकित है। राहुल गांधी द्वारा यह आंकड़े 16 मार्च को भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट से निकाले हुए दिखाए गये हैं। कांफ्रेंस में आरोप लगाया गया कि आदित्य श्रीवास्तव का नाम चार जगह अंकित दिखाया गया है। इनका नाम मुंबई सब अर्बन की विधान सभा 158 जोगेश्वरीपूर्व की बूथ संख्या 197 के क०सं० 877, बैंगलोर अर्बन की विधान सभा 174 महादेवपुरा के बूथ संख्या 458 के क0सं0 1265, बूथ सं0 459 के क०सं० 678 पर एवं लखनऊ की विधान सभा 173 लखनऊ पूर्व के बूथ संख्या 84 के क०सं० 630 पर अंकित दिखाया गया है। विशाल सिंह पुत्र महीपाल सिंह का नाम तीन जगह अंकित दिखाया गया है। इनका नाम बैंगलोर की विधान सभा 174 महादेवपुरा में बूथ सं0 513 के क०सं० 926 एवं बूथ सं0 321 के क०सं० 894 तथा वाराणसी की विधानसभा 390 वाराणसी कैण्ट में बूथ सं० 82 के क०सं० 516 पर अंकित दिखाया गया है। आदित्य श्रीवास्तव पुत्र एस०पी० श्रीवास्तव (इपिक नं० एफपीपी 6437040) एवं विशाल सिंह पुत्र महीपाल सिंह (इपिक नं० आईएनबी 2722288) के नाम को वेबसाइट पर सर्च किया गया तो पाया गया कि आदित्य श्रीवास्तव पुत्र एस०पी०श्रीवास्तव (इपिक नं० एफपीपी 6437040) का नाम बैंगलोर अर्बन की विधान सभा 174 महादेवपुरा के बूथ संख्या 458 क०सं० 1265 में एवं विशाल सिंह पुत्र महीपाल सिंह (इपिक नं० आईएनबी 2722288) का बैंगलोर की विधान सभा 174 महादेवपुरा में बूथ सं0 513 क०सं० 926 पर ही अंकित है एवं उपरोक्त मतदाताओं का नाम उत्तर प्रदेश की विधान सभा 173 लखनऊ पूर्व एवं विधान सभा 390 वाराणसी कैण्ट में इनका नाम अंकित नहीं है। इस प्रकार उत्तर प्रदेश के बारे में जो तथ्य प्रस्तुत किये गये वे सही नहीं पाये गये।

गजरौला का नामी रेस्टोरेंट मोगा इलेवन पर जुमार्ना, संभल में मेंबर बनाने के नाम पर ठगे लाखों

चंदौसी/संभल। (हनी चन्द्रा) सब का सपना:- पहले तो संभल में अपने होटल का आउटलेट खोला, सदस्य बनने पर लोगो को रेस्टोरेंट में एक वर्ष छूट देने का लालच दिया। हजारों सदस्य बनाए कुछ दिन में लाखों रुपए इकठ्ठा किए, मौका देखा और आउटलेट बंद कर फरार हो गए। मामला जिला उपभोक्ता आयोग पहुंचा तो आयोग ने वसूल की गई सदस्यता धनराशि क्षतिपूर्ति सहित वापस करने का आदेश सुना दिया। बाजार गंज सरायतरीन निवासी पारस वार्ष्णेय एडवोकेट पुत्र देवेंद्र वार्ष्णेय एडवोकेट के अनुसार गजरौला के प्रसिद्ध मोगा इलेवन ने अपना एक आउटलेट संभल में खोला और

रेस्टोरेंट स्वामी ने संभल में सैकड़ों लोगों से संपर्क कर आउटलेट का सदस्य बनने का अनुरोध किया और बताया कि जो सदस्य रेस्टोरेंट में खाना खाने आयेगा उसे एक वर्ष तक खाने के बिल पर 50 प्रतिशत की छूट दी जाएगी साथ ही अन्य लाभ भी दिए जाएंगे संभल में हजारों की संख्या में सदस्य बनाए गए वह भी सदस्य बना लेकिन मोगा इलेवन ने कुछ दिनों बाद ही अपना आउटलेट संभल में बंद कर दिया और लोगों को सदस्यता शुल्क भी वापस नहीं किया जिस पर उपभोक्ता ने जिला उपभोक्ता आयोग संभल में परिवाद योजित किया लेकिन मोगा इलेवन ने लाखों रुपए वसूल कर आउटलेट संभल में बंद करने और सदस्यता शुल्क वापस ना करने का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया जिस पर जिला उपभोक्ता आयोग संभल ने मोगा इलेवन गजरौला के स्वामी को आदेश दिया कि वह दो माह के अंदर वसूला गया सदस्यता शुल्क रुपए 2 हजार 7 प्रतिशत ब्याज सहित सहित वापस करे साथ ही 10 हजार रुपए क्षतिपूर्ति व 5 हजार वाद व्यय हेतु भी उपभोक्ता को अदा करे ।

बिजनौर में मां ने ही की थी अपने बेटे की हत्या

बिजनौर (सब का सपना) शौसिहं सैनी:- जनपद के थाना मंडावली क्षेत्र में गुरुवार रात एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई थी। जिसमें 32 वर्षीय युवक की गला रेत कर हत्या कर दी गई थी। जिसको लेकर पुलिस प्रशासन ने अपनी जाँच भी शुरू कर दी थी। पुलिस प्रशासन ने जांच कर खुलासा किया है वह चौका देने वाला है। पुलिस जांच में खुलासा हुआ कि मृतक युवक नशे का आदी था और आए दिन घरवालों से बदतमीजी करता था। 7 अगस्त की रात युवक ने शराब के नशे में अपनी ही मां के साथ अश्लील हरकत करने की कोशिश की। यह सब सहने

के बाद मां का गुस्सा फट पड़ा और उसने दरांती से बेटे का गला काट दिया, फिर चेहरे पर भी कई वार किए। वारदात के बाद आरोपी मां ने चीख-पुकार मचाकर पड़ोसियों को बुलाया और कहानी गढ़ दी कि कुछ बदमाश दीवार फांदकर आए और बेटे की हत्या करके भाग गए। घटना के वक्त बड़ा बेटा और बहू सो रहे थे। मां के रोने-धोने के नाटक ने किसी को शक नहीं होने दिया। पुलिस ने घर के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे चेक किए, तो पता चला कि घटना के वक्त कोई भी घर से अंदर या बाहर नहीं गया। शक गहराने पर पुलिस ने मृतक युवक की मां से सख्ती से पूछताछ की, तो उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया। बड़े बेटे ने बताया, कि मां रो रही थीं। इसलिए हमें बिल्कुल भी शक नहीं हुआ कि उन्हीं ने हत्या की होगी। एसपी सिटी संजीव बाजपेई ने बताया कि आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसने जुर्म स्वीकार कर लिया है।

कुएं में उतरे तीन तहेरे चचेरे भाई, तीनों की मौत

बिजनौर (सब का सपना) शौसिहं सैनी:- जनपद के थाना शिवाला कला क्षेत्र के गांव सरकथल में रविवार दोपहर एक दर्दनाक हादसे ने पूरे गांव को गमगीन कर दिया। यहां तीन तहेरे चचेरे भाई–हिमांशु (पुत्र हरि सिंह), आशीष (पुत्र हरि सिंह) और छत्रपाल (पुत्र धर्मवीर)–कुएं में उतरे थे जिसके बाद तीनों दम घुटने से मौत के शिकार हो गए। ग्रामीणों के मुताबिक, गांव के पुराने कुएं में नीचे पानी जमा था। तीनों युवक नहाने और पानी निकालने के लिए कुएं को चलाने की कोशिश कर रहे थे। सबसे पहले एक युवक कुएं में उतरा, लेकिन कुछ

देर बाद उसकी कोई आवाज नहीं आई। उसे देखने दूसरा और फिर तीसरा युवक भी नीचे उतर गया। कुएं के अंदर ऑक्सीजन की कमी के कारण तीनों बेहोश हो गए और वहीं उनकी जान चली गई। जब काफी देर तक तीनों बाहर नहीं निकले तो ग्रामीणों को शक हुआ। रस्सी व सीढ़ी की मदद से उन्हें बाहर निकाला गया और तुरंत सीएचसी नूरपुर ले जाया गया। जहां ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर कुलदीप सिंह ने जांच के बाद बताया कि तीनों को लाने से पहले ही उनकी मौत हो चुकी थी। घटना की खबर मिलते ही गांव में चीख-पुकार मच गई। मृतकों के घरों में कोहराम मच गया, परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। गांव के बुजुर्ग बीर सिंह, जो मृतकों के चाचा हैं, ने बताया कि यह परिवार के लिए अपूरणीय क्षति है। जिसके बाद थाना शिवाला कला पुलिस भी मौके पर पहुंच गई और शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए बिजनौर भेज दिया गया।

रोडवेज बस ने बाइक सवार युवको को मारी टक्कर, दोनों की मौत

बिजनौर(सब का सपना) शौसिहं सैनी:- जनपद के थाना कोतवाली देहात क्षेत्र में तेज रफ्तार बेकाबू रोडवेज बस ने बाइक सवार दो युवकों को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में दोनों युवकों की दर्दनाक मौत हो गई।घटना से युवकों के परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और बस चालक और बस को कब्जे में ले लिया है। जनपद बिजनौर के थाना कोतवाली देहात क्षेत्र के नजीबाबाद हाईवे रोड पर गांव सिकंदरपुर के पास तेज रफ्तार बेकाबू रोडवेज बस ने बाइक पर सवार होकर जा रहे दो युवकों को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में दोनों युवकों की दर्दनाक मौत हो गई। युवकों की मौत से इलाके में सनसनी फैल गई और परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। सूचना के बाद पहुंची पुलिस ने युवको के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल बिजनौर भिजवा दिया है। पुलिस ने रोडवेज बस व बस चालक को कब्जे में ले लिया है।

प्लास से उखाड़े दांत, पैरों पर सरिये से वार... जबरन संबंध बनाने और ब्लैकमेलिंग से परेशान दंपती ने की युवक की हत्या

चंदौसी/संभल। जबरन संबंध बनाने और ब्लैकमेल कर रुपये व जेवरात ऐंठने से परेशान दंपती ने युवक की हत्या की साजिश रच डाली। शनिवार की रात दंपती ने युवक को घर बुलाकर बेरहमी से पीटा, उसके दांत प्लास से उखाड़ दिए और पैरों पर सरिए से वार किए। गंभीर रूप से घायल युवक ने इलाज के दौरान दम तोड़ गया। पुलिस ने आरोपित पति-पत्नी को गिरफ्तार कर हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया है। अनीश फेरी का करता था काम नगर के लक्ष्मणगंज बारिस नगर नूरी मस्जिद निवासी 25 वर्षीय अनीश उर्फ समीर पुत्र मुस्तकीम फेरी लगाकर कपड़े बेचता था। शनिवार रात करीब दो बजे अनीश के बड़े भाई को सूचना मिली कि उसे बुरी तरह पीटा गया है। परिजन पहुंचे तो वह बैठक में लहूलुहान पड़ा था। पुलिस की मदद से उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले

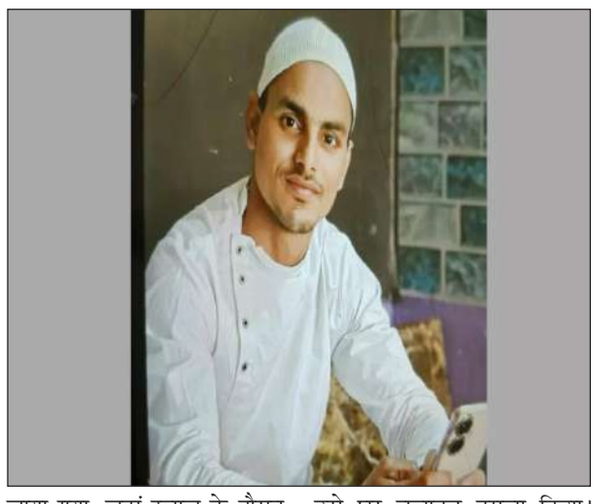

जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। घायल अवस्था में पुलिस को दी जानकारी घायल अवस्था में अनीश ने पुलिस को बताया कि लक्ष्मणगंज आशर्फी चौक निवासी व्यक्ति और उसकी पत्नी ने उसे घर बुलाकर हमला किया। पुलिस ने दंपति को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो चौंकाने वाली कहानी सामने आई। पत्नी के मोबाइल रिचार्ज के बहाने से शुरू की बातचीत आरोपित ने बताया कि अनीश उसके साथ काम करता था और तीन साल पहले उसकी पत्नी के मोबाइल पर रिचार्ज कराने के बहाने बातचीत शुरू कर दी थी। इसके बाद उसने पत्नी से जबरन संबंध बनाए और ब्लैकमेल कर रुपये व जेवरात ऐंठने लगा। तीन साल से संबंध बनाने पर मजबूर कर रहा था अनीश आरोपित के अनुसार, पिछले तीन साल से अनीश उसकी पत्नी को संबंध बनाने को मजबूर कर रहा था, जिससे उनकी बदनामी होने लगी। तंग आकर दोनों ने उसे मारने की योजना बनाई। शनिवार देर रात पत्नी ने उसे घर बुलाया और दोनों ने मिलकर हमला किया। पुलिस ने दी जानकारी अपर पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि आरोपित पति-पत्नी को गिरफ्तार कर हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। उन्होंने पूछताछ में अपराध स्वीकार किया है।

सपा कार्यकताओं ने फूलन देवी के चित्र पर माल्यार्पण कर मनाई जयंती

बहजोई/संभल(सब का सपना):- समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निदेर्शानुसार अत्याचार शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करने वाली समाजिक न्याय की योद्धा मिजार्पुर से रही पूर्व सांसद स्व. फूलन देवी की जयंती मनाई गई । बैठक में जिला अध्यक्ष असगर अली अंसारी एवं पदाधिकारीयों ने स्व. फूलन देवी के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित कर जयंती मनाई। जिला अध्यक्ष असगर अली अंसारी ने कहा कि स्व. फूलन देवी को स्व. नेता मुलायम सिंह यादव ने दो बार सांसद बनाने का काम किया था। शोषित पीड़ित फूलन देवी ने अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ने का काम किया वह महिला समाज को जागरूक

करने का काम किया। उच, नीच खत्म कर समाज में समाजिक परिवर्तन करने का काम किया। अपने साहस से उन्होंने महिलाओं को मजबूत संदेश देने का काम किया था। उसके बाद समाजवादी पार्टी की मासिक बैठक हुई। जिसमें जिला अध्यक्ष असगर अली अंसारी ने कहा कि सभी मिलकर पी डी ए को मजबूत करने का काम करें। जिला संभल की सभी विधानसभा क्षेत्रों से आए पदाधिकारी विधानसभा ब्लाक नगर अध्यक्ष वरिष्ठ नेता सम्मानित कार्यकताओं ने अपने अपने विधानसभा क्षेत्र की बात रखी। बैठक में खाद बीज बिजली सड़कों में गड्ढे की समस्या को उठाने का काम किया गया। बैठक को सम्बोधित करते हुए जिला महासचिव कृष्ण मुरारी शंखधार ने कहा सभी पदाधिकारी समय से मीटिंग आने को कहा एवं गांव गांव जाकर पी डी ए मजबूत करें बैठक में कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष असगर अली अंसारी ने संचालन कृष्ण मुरारी शंखधार जिला महासचिव शोभित कुमार काका कमल शर्मा निसार अहमद उमेश यादव विधानसभा अध्यक्ष सद्दाम कुरेशी अशोक राणा एडवोकेट चेतन गुप्ता रामजीमल एडवोकेट रवेंद्र पाल हाजी तसव्दुक एस पी विलाल विभोर अग्रवाल पप्पू शर्मा मनोज शर्मा अशोक गुप्ता कुबर पाल सिंह यादव बब्बन मोर्या शिवम यादव मनीष यादव सौराज सिंह यादव सददन शेख होराम सिंह जाटव ललितेश यादव आदि उपस्थित रहे।

कोरोना काल से बंद पड़ी ऋषिकेश बंदाकूई आगरा कैंट ट्रेन को चलाने की उठाई गई मांग

बहजोई/संभल(सब का सपना):- श्री वार्ष्णेय सभा बहजोई के सदस्यों के साथ नगर के विभिन्न वर्ग के लोगों ने आज रेलवे स्टेशन पर पहुंचकर रेलवे मुख्य महाप्रबंधक बडौदा हाउस तथा मंडलीयप्रबंधक मंडल कार्यालय मुरादाबाद के नाम रेलवे स्टेशन मास्टर प्रेमचंद शर्मा को ज्ञापन सौंपकर कोरोना काल से बंद आगरा कैंट ट्रेन को चलाने की मांग की है । उनका कहना है कि ऋषिकेश जो योग नगरी के नाम से प्रसिद्ध है तथा बंदाकुई ,आगरा, अलीगढ़ मुरादाबाद ,लक्सर , हरिद्वार,विभिन्न स्टेशनों को जाने के लिए एकमात्र पैसेंजर ट्रेन जिसे कोरोना काल का बहाना देखकर बंद कर दिया गया था जिसे अभी तक चालू नहीं किया गया है जिससे आमजन व्यापारियों छात्रों तथा अन्य

वर्गों के लोगों को आने-जाने में काफी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है अलीगढ़ जाने के लिए रात्रि 9:00 बजे के बाद तथा सुबह 8:00 बजे से पहले अलीगढ़ की ओर जाने के लिए कोई भी ट्रेन नहीं है इस बीच में मात्र एकमात्र ट्रेन थी आगरा कैंट जिसको बंद कर दिया गया है ऐसी स्थिति में अलीगढ़ आगरा के लिए तथा ऋषिकेश जाने के लिए उक्त ट्रेन को पुनः चलाया जाए ज्ञापन देने वालों में यशवर्धन वोडाफोन, लव मोहन वार्ष्णेय एडवोकेट आयुष कुमार वार्ष्णेय एडवोकेट भास्कर नारायण चिंटू गौरव शंकर गोलू उमंग गुरुजी सौरभ वार्ष्णेय आदि लोग

गौरीगंज में मनाई गई बहुजन वीरांगना फूलन देवी की 62वीं जयंती

अमेठी(सब का सपना)आदित्य बरनवाल:- रविवार को समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय गौरीगंज में बहुजन वीरांगना फूलन देवी की 62वीं जयंती बड़े ही सम्मान और श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस अवसर पर पार्टी द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा में जिलेभर से पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता जुटे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सपा जिलाध्यक्ष राम उदित यादव ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में समाजवादी मजदूर सभा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राम सिंह मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन पार्टी प्रवक्ता राजेश मिश्र ने किया। सभा की शुरूआत फूलन देवी के चित्र पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित कर हुई। इसके बाद वक्ताओं ने उनके

जीवन संघर्ष, साहस और सामाजिक न्याय की लड़ाई में निभाई गई भूमिका को विस्तार से याद किया। जिलाध्यक्ष राम उदित यादव ने अपने संबोधन में कहा, "फूलन देवी ने समाज के वंचित, शोषित और पीड़ित वर्ग के अधिकारों की रक्षा के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई, चाहे इसके लिए उन्हें कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़ा। मुख्य अतिथि राम सिंह ने कहा कि फूलन देवी ने गरीब और दलित वर्ग के आत्मसम्मान की लड़ाई लड़ी। वह न केवल साहस की प्रतीक थीं, बल्कि समाज में समानता और न्याय की पक्षधर भी थीं। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर हमें आज भी अन्याय के खिलाफ खड़ा होना चाहिए।

कार्यक्रम में वक्ताओं ने यह भी कहा कि फूलन देवी का बलिदान देश और समाज के लिए एक ऐसी विरासत है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता। उनके संघर्ष की गाथा आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरित करती रहेगी। इस अवसर पर राकेश यादव कौहार, मनीराम वर्मा, चंद्रशेखर यादव, चंद्रकांत पाल, उत्पल सिंह, दीपू तिवारी, अशोक यादव, रामप्रसाद सहित जिले के अनेक पार्टी नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

शुभम सिंह ने 100 से अधिक असहाय बहनों संग मनाया भाई-बहन का पर्व

अमेठी (सब का सपना)आदित्य बरनवाल:- रक्षाबंधन के पावन अवसर पर यूथ कांग्रेस जिला अध्यक्ष शुभम सिंह ने 186 अमेठी विधानसभा के विभिन्न क्षेत्रों में जनसंपर्क अभियान चलाते हुए असहाय, गरीब, दलित एवं वंचित समाज की 100 से अधिक बहनों और माताओं संग भाई-बहन के इस पवित्र रिश्ते का पर्व मनाया। इस दौरान शुभम सिंह ने बहनों से राखी बंधवाई और उन्हें विश्वास दिलाया कि वे हर परिस्थिति में उनके सुख-दुख में साथ खड़े रहेंगे। उन्होंने कहा कि समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचना और उनकी भावनाओं को समझना ही उनका

संकल्प है। शुभम सिंह ने आगे कहा, रक्षाबंधन केवल एक धागा नहीं, बल्कि विश्वास, प्रेम और सुरक्षा का प्रतीक है। वंचित वर्ग के बीच यह पर्व मनाने से जो अपनापन और आशीर्वाद मिला, वह मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान है। कार्यक्रम में रिंकू कुमार, पवन वर्मा, दिनेश कोरी, रवि मौर्य सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे। सभी ने मिलकर इस विशेष दिन को यादगार बनाने में योगदान दिया।

पर्यावरण प्रेमीयो ने पीपल को बांधा रक्षासूत्र, लिया पौधों के संरक्षण का संकल्प

अमेठी(सब का सपना)आदित्य बरनवाल:- पवित्र रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर जलबिरादरी की ओर से पर्यावरण संरक्षण का अनूठा संदेश दिया गया। प्रकृति प्रेमियों ने पीपल के वृक्ष को रक्षासूत्र बांधकर पौधरोपण किया और उनके नियमित रखरखाव का संकल्प लिया। कार्यक्रम में पर्यावरणविद् डॉ. अर्जुन पाण्डेय ने कहा, हरियाली धरती का श्रृंगार है, वृक्ष धरा के आभूषण हैं। हमें पुराने समय की तरह विरवा पूत समान की भावना अपनानी चाहिए और जनमानस को इसके लिए जागरूक करना जरूरी है। वरिष्ठ साहित्यकार राजेश विक्रांत ने अपने संबोधन में कहा कि पौधों की देखभाल से ही हम धरती को हरा-भरा रख सकते हैं और यही हमारे

जीवन का पर्यावरणीय सूत्र होना चाहिए। प्रकृति प्रेमी डॉ. शिवम तिवारी ने युवाओं से आह्वान किया, वृक्ष के बिना जल कहां? हमें धरती को वीरान होने से बचाना है और अंधाधुंध वृक्ष कटाई को रोककर क्षेत्र को पानीदार बनाना जरूरी है। इस अवसर पर डॉ. अभिमन्यु पाण्डेय, संजय मिश्र, हेमलता त्रिपाठी, रीता पाण्डेय और शालिनी तिवारी ने भी रक्षासूत्र बांधते हुए लोगों को पंचवटी के वृक्ष-पीपल, बरगद, पाकड़, गूलर एवं नीम-लगाने और संजोने के लिए प्रेरित किया।

पत्नी ने पति को खिलाया नशीला पदार्थ, धारदार हथियार से हमला कर काटा प्राइवेट पार्ट

अमेठी(सब का सपना)आदित्य बरनवाल:- जिले के जगदीशपुर कोतवाली क्षेत्र के मैगलगंज कचनाव गांव में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। पति-पत्नी के बीच चल रहे विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। पत्नी ने अपने पति को पहले नशीला पदार्थ खिलाया और फिर चाकुओं से पूरे शरीर पर हमला कर दिया। आरोप है कि हमले के दौरान उसने पति का प्राइवेट पार्ट भी काट दिया और मौके से फरार हो गई। गंभीर रूप से घायल पति अंसार अहमद को परिजनों ने जगदीशपुर ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया, जहां से हालत नाजुक होने पर उन्हें एम्स रायबरेली रेफर कर दिया गया। जानकारी के अनुसार अंसार अहमद की दो शादियां हुई थीं-पहली पत्नी

साबितुल, जो इटौंजा (अयोध्या) की रहने वाली है, और दूसरी पत्नी नाजमीन बानो, जो हारीमऊ (जगदीशपुर) की निवासी है। दोनों पत्नियों के बीच लंबे समय से विवाद चल रहा था, जिसके चलते दूसरी पत्नी ने यह हमला किया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी है। फिलहाल आरोपी पत्नी फरार है।

शकरपुर में महिला से लूट करने वाले तीन बदमाश गिरफ्तार, प्रमोद पर पहले से दर्ज हैं 26 केस

पूर्वी दिल्ली। शकरपुर इलाके में सात अगस्त की रात को बीच गली में पीछे से गला दबाकर महिला से चेन व कुंडल लूटने वाले तीन बदमाशों को पूर्वी जिले के स्पेशल स्टाफ ने गिरफ्तार कर लिया है। बदमाशों की पहचान मयूर विहार थाने के घोषित बदमाश व त्रिलोकपुरी निवासी प्रमोद उर्फ देव उर्फ चिकना, इसके साथी नितिन व नजफगढ़ निवासी अंगद के रूप में हुई है। पुलिस ने इनके पास से वारदात में इस्तेमाल स्कूटी बरामद की है। प्रमोद पर पहले से लूट, झपटमारी के 26 केस दर्ज हैं। 30 जून 2025 को ही प्रमोद जमानत पर जेल से बाहर आया था। पुलिस ने तीनों बदमाशों पर संगठित अपराध की धारा लगाई है। जिला पुलिस उपायुक्त अभिषेक धानिया ने बताया कि सात अगस्त की रात साढ़े दस बजे रश्मि जैन नाम की महिला से स्कूटी सवार बदमाशों ने गला दबाकर लूट की थी। अपराध की गंभीरता को देखते हुए स्पेशल स्टाफ की टीम को इसमें लगाया गया। पुलिस ने वारदात स्थल पर लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले। पता चला वारदात में तीन बदमाश शामिल हैं। फुटेज के जरिये पुलिस ने प्रमोद की पहचान की। पुलिस ने त्रिलोकपुरी से नितिन को गिरफ्तार किया। उसके बाद अंगद को दबोचा। आखिर में प्रमोद को गिरफ्तार किया। नितिन पर लूट व झपटमारी के 11 केस पहले से दर्ज हैं। वह गला दबाकर लोगों से लूटपाट करता है। अंगद पर भी एक केस दर्ज है। यह पेशे से डिलीवरी ब्वाय है। तीनों मिलकर वारदात को अंजाम दे रहे थे।

सरकारी दस्तावेजों को गायब कर रही भाजपा, एएपी ने लगाया भ्रष्टाचार का आरोप

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में शनिवार को मूसलाधार बारिश देखने को मिली। जिसके चलते की इलाकों में भारी जलभराव हुआ। जिसे लेकर आम आदमी पार्टी ने दिल्ली की भाजपा सरकार पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है। दिल्ली आप अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने आरोप लगाया है कि दिल्ली सरकार नालों के डिसिल्टिंग (गाद निकालने) से जुड़ी जानकारी और दस्तावेज को नष्ट कर रही है। डिसिल्टिंग में भाजपा सरकार और उनके अधिकारियों ने करोड़ों रुपए का भ्रष्टाचार किया है। सौरभ भारद्वाज ने कहा, 'कल रक्षाबंधन पर भी लोगों को जलभराव का शिकार होना पड़ा, कई लोगों की जलभराव की वजह से मौत हुई है। ढाई साल के बच्चे की खुले हुए सीवर में डूबने से मौत हो गई। डिसिल्टिंग कराने में भाजपा सरकार और उनके अधिकारियों ने भयंकर भ्रष्टाचार किया है। हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद इनके अधिकारियों ने पिछले साल भी डिसिल्टिंग की थर्ड पार्टी ऑडिट नहीं कराई और ना इस साल कराई है।' उन्होंने कहा, 'मैंने आरटीई लगाकर पूछा कि मुख्य सचिव को जो मैंने पत्र लिखकर डिसिल्टिंग की थर्ड पार्टी ऑडिट रिपोर्ट मांगी थी, उसका क्या हुआ? मेरी आरटीई के जवाब में मुख्य सचिव के ऑफिस ने बताया कि हमें ऐसा कोई पत्र मिला ही नहीं है। इसका मतलब है कि दिल्ली की भाजपा सरकार आधिकारिक दस्तावेजों को गायब कर रही है।' वहीं, 'सौरभ भारद्वाज ने सोशल मीडिया पर लिखा, लगता है अब दिल्ली सरकार नालों के डिसिल्टिंग से जुड़ी जानकारी और दस्तावेज को नष्ट कर रही है। आरटीई के जवाब में सीएस ऑफिस ने कहा है कि उनको मेरे द्वारा भेजी गई डिसिल्टिंग और थर्ड पार्टी ऑडिट की शिकायत मिली ही नहीं। जिस पत्र की कॉपी मीडिया और सोशल मीडिया के पास है वो पत्र मुख्य सचिव को मिला ही नहीं ? ये तो सीधा कानूनी अपराध है।'

भारी बारिश और त्यौहार के बीच कैब-ऑटो वालों ने वसूला तीन गुना किराया, सोशल मीडिया पर फूटा लोगों का गुस्सा

नई दिल्ली। वर्षा व त्यौहार के बीच कैब और ऑटो वालों ने मनमाना किराया वसूला। कैब एग्रीगेटर कंपनियों के एप में पहले तो कैब की उपलब्धता काफी कम थी दूसरे जो कैब मिल रहे थे उनका किराया आम दिनों के मुकाबले तीन गुना तक अधिक था। यही स्थिति ऑटो और बाइक सेवा की रही। जिसके चलते बहनों और भाईयों को परेशानी के साथ महंगी यात्रा का बोझ उठाना पड़ा। इसको ऐसे समझा जा सकता है कि मंडी हाउस से लक्ष्मी नगर तक का आम दिनों तक में कैब 100

रुपये लगता था वह शनिवार को वर्षा और उसके बाद शाम तक 300 रुपये हो गए थे। इसी तरह, बदरपुर, ओखला, आईजीआई एयरपोर्ट के साथ नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से दिल्ली के किसी हिस्से का शुल्क था। यहां तक तो गनीमत था, लेकिन कई मामलों में लंबे इंतजार के बाद कैब चालकों द्वारा यात्रा निरस्त कर दी जा रही थी। एक्स पोस्ट में कई यूजर ने यात्रा निरस्त करने से उनकी निर्धारित ट्रेन छूटने की भी जानकारी दी। ईस्ट आफ कैलाश की प्रियंका को करोलबाग रखी बांधने आना था। उन्होंने बताया कि लव यू इंतजार तक कप की सेवा नहीं मिली थी साथ में ऑटो वाले जाने से मना कर रहे थे जाने की गुजारिश पर वह तीन से चार गुना तक महंगा भाड़ा मांग रहे थे। आखिरकार उन्हें उसे मांगों को स्वीकार करते हुए जाना पड़ा।

दिल्ली के पॉश इलाके में तेज रफ्तार थार ने दो लोगों को कुचला, एक की मौत; दूसरा घायल

नई दिल्ली। राजधानी के 11 मूर्ति रोड के पास रविवार सुबह तेज रफ्तार थार का कहर देखने को मिला। यहां थार चालक ने सड़क पार कर रहे दो लोगों को कुचल दिया। इस हादसे में एक शख्स की मौत हो गई जबकि दूसरे को घायल अवस्था में इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उसकी हालत गंभीर बताई जा रही है। नशे में गाड़ी चला रहा था थार चालक ताजा जानकारी के मुताबिक, दिल्ली पुलिस ने आरोपित थार चालक को मौके से गिरफ्तार कर लिया गया है। बताया जा रहा है कि वह नशे में गाड़ी चला रहा था। गाड़ी के अंदर से शराब की बोतल भी बरामद की गई है। मौके पर पहुंची फोरेंसिक टीम थार ड्राइवर के शराब का सेवन करने की जांच कर रही है। दुर्घटना के सही कारण का पता लगाने के लिए पुलिस आगे की जांच कर रही है।

अस्पताल में लगी आग, जान बचाने के लिए टॉयलेट में छिपे सफाई कर्मचारी की मौत

पूर्वी दिल्ली। आनंद विहार स्थित तीन मंजिला कासमास मल्टी स्पेशियलिटी अस्पताल में शनिवार दोपहर में आग लग गई। हादसे के वक्त अस्पताल में आठ मरीज भर्ती थे। अस्पताल के भू-तल पर बने सर्वर रूम में शॉर्ट सर्किट होने से आग भड़की थी। सर्वर रूम से धुआं उठते ही अस्पताल के कर्मचारियों ने मरीजों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। सूचना मिलते ही दमकल व पुलिस की टीम अस्पताल पहुंची। धुएं के कारण अस्पताल के अंदर तीन कर्मचारी फंस गए। दमकल ने अचेत पड़े दो कर्मचारियों को सुरक्षित बाहर निकाला। एक सफाई कर्मचारी का शव शौचालय के अंदर मिला। मृतक की पहचान अमित कुमार (32) के रूप में हुई है। अचेत

लोगों में हरदेवी (50) और नरेश (56) को पुष्पांजलि अस्पताल में भर्ती करवाया। बाकी आठ मरीजों को भी इलाज के लिए इसी अस्पताल में भेजा गया है। सभी की हालत बेहतर है। पार्किंग के आधे हिस्से में बनाया हुआ था सर्वर रूम सूत्रों का कहना है अस्पताल में लगे फायर फाइटिंग सिस्टम ने ठीक से काम नहीं किया। सही से काम किया होता आग बढ़ती नहीं। पुलिस ने बताया कि आनंद विहार में तीन मंजिला कासमास मल्टी स्पेशियलिटी अस्पताल बना हुआ है। भू-तल पर आधे हिस्से में पार्किंग व बाकी हिस्से में सर्वेर रूम बना हुआ है। शनिवार दोपहर 12:12 बजे सर्वर रूम में अचानक आग लगी। आग लगते ही अस्पताल में अफरा तफरी मच गई। हादसे के वक्त अस्पताल में आठ मरीज व 25 से अधिक डाक्टर व कर्मचारी मौजूद थे। धुआं बढ़ने से पहले ही मरीजों को पहली व दूसरी मंजिल से अस्पताल के बाहर निकाला गया। अधिकतर कर्मचारी व डाक्टर भी बाहर आग गए। अस्पताल में आपातकालीन द्वार भी था, जिससे लोग बाहर आए। भू-तल पर आग बढ़ने पर धुआं सीढ़ियों के जरिये तेजी से ऊपरी मंजिलों पर भर गया। तीन कर्मचारी अंदर फंस गए। पुलिस व दमकल ने उन्हें निकाला। पुलिस का कहना है आग से भू-तल पर ही नुकसान हुआ है। ऊपरी मंजिल पर धुआं भरा था।

तेज रफ्तार गाड़ी ने दो लोगों को कुचला, एक शख्स की मौके पर ही मौत, दूसरे की हालत गंभीर

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में एक बार फिर बेकाबू तेज रफ्तार थार का कहर देखने को मिला है। थार ने सड़क पर पैदल चल रहे दो लोगों को कुचल दिया। जिनमें से एक की मौके पर ही मौत हो गई और दूसरे की हालत गंभीर बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक, हादसा नई दिल्ली के चाणक्यपुरी इलाके में हुआ है। थार गाड़ी ने दो लोगों को टक्कर मार दी। हादसे में एक शख्स की मौके पर ही मौत हो गई है, जबकि दूसरे को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना 11 मूर्ति के पास हुई है। गाड़ी से शराब की बोतलें मिली बताया जा रहा है कि सड़क पार करने के दौरान हादसा हुआ है। घटना को अंजाम देने वाले चालक को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है और उससे पूछताछ कर रही है। गाड़ी से शराब की बोतलें मिली हैं। फोरेंसिक टीम से पूरे वाहन की जांच कराई जा रही है। घायल शख्स अभी बयान देने की हालत में नहीं है, पुलिस मरने वाले शख्स की पहचान करने में जुटी है। नई दिल्ली डीसीपी देवेश कुमार महला ने कहा, "आज चाणक्यपुरी में सुबह करीब 6:30 बजे हमारी पेट्रोलिंग गाड़ी ने देखा कि एक एक्सीडेंट हुआ है। कार चालक का नाम आशीष है और वो गुडगांव से शकरपुर की ओर जा रहा था। गाड़ी उसके दोस्त की थी। फुटपाथ पर उसकी टक्कर 2 लोगों से हुई, जिसमें एक की मौत हो गई और दूसरा घायल है। कार चालक को गिरफ्तार कर लिया गया है। आगे की जांच जारी है। हम पीड़ितों की पहचान करने की कोशिश कर रहे हैं।"

केयरटेकर नर्स ने तोड़ा बुजुर्ग महिला का भरोसा, खाते से निकाल लिए 14 लाख रुपये

पश्चिमी दिल्ली। द्वारका जिला साइबर सेल ने जुए की लत की वजह से एक बुजुर्ग महिला के बैंक खाते में सेंध लगाने वाले उसके पूर्व केयरटेकर को राजस्थान से गिरफ्तार किया है।आरोपित का नाम दीपक कुमार सैनी है। वह पीड़िता के घर मेल नर्स का काम करता था और बुजुर्ग दंपती की देखभाल करता था। आरोपित ने महिला के खाते से 14.35 लाख रुपये निकाल लिए थे। पुलिस ने आरोपित के कब्जे से एक मोबाइल फोन बरामद किया है। द्वारका जिला पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि द्वारका स्थित एक अपार्टमेंट में रहने वाली बुजुर्ग महिला मंजूषा रानी गुप्ता ने 16 जुलाई द्वारका साइबर सेल में अपने

पूर्व केयरटेकर नर्स दीपक कुमार सैनी के खिलाफ धोखाधड़ी की शिकायत की। शिकायत में उन्होंने बताया कि दीपक कुमार मार्च 2020 से उनके और उनके पति के लिए केयरटेकर नर्स के रूप में काम करता था। अप्रैल 2022 में उनके पति का देहांत हो गया। तब से दीपक उनके केयरटेकर थे। कुछ कारणों से 21 फरवरी को उसने काम छोड़ दिया। हालांकि मार्च से जून तक वह उनसे मिलने के लिए घर आया। अंतिम बार 10 जून को आया था। 19 जून को आईसीआईसीआई बैंक से उनके बैंक खाते को लेकर कॉल आया। जांच करने पर पता चला कि उनके बिना उनकी जानकारी के उनके खाते से 14.35 लाख रुपये निकाले गए हैं। उन्होंने बताया कि दीपक डॉक्टरों के अपाइंटमेंट के लिए उसके फोन का इस्तेमाल करता था। उन्होंने आरोप लगाया कि दीपक ने ही उसके खाते से पैसे निकाले हैं। साइबर सेल ने मामले की जांच के दौरान शिकायतकर्ता के बैंक खाते के विवरण का विश्लेषण किया। आइपी लाग, सीडीआर और बैंक स्टेटमेंट के विश्लेषण से पता चला कि आरोपित दीपक ने ही पैसे ट्रांसफर किए हैं। पुलिस ने दीपक के बारे में जानकारी हासिल कर उसे राजस्थान के सीकर से गिरफ्तार कर लिया।

गैंगस्टर कपिल सांगवान का गुर्गा गिरफ्तार, कब्जे से एक पिस्टल और दो कारतूस बरामद

पश्चिमी दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस से पहले आपराधिक वारदातों को अंजाम देने के मकसद से घूम रहे गैंगस्टर के एक गुर्गे को द्वारका जिला पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित का नाम ईश्वर सिंह उर्फ मोनू है। पुलिस के अनुसार ईश्वर सिंह कुख्यात बदमाश गैंगस्टर कपिल सांगवान उर्फ नंदू गैंग का सक्रिय सदस्य है। आरोपित के कब्जे से पुलिस ने पिस्टल और दो कारतूस बरामद किए हैं। इस पर पहले से कई संगीन मामले दर्ज हैं। द्वारका जिला पुलिस के अधिकारी ने बताया कि स्वतंत्रता दिवस की सुरक्षा को लेकर जिले की पुलिस बदमाशों पर निगरानी रख रही है। इसके लिए पुलिस ने मुखबिरों को सक्रिय किया है। शुक्रवार को पुलिस को द्वारका सेक्टर 23 इलाके में एक बदमाश के हथियार लेकर घूमने की जानकारी मिली। पुलिस ने सूचना पर तुरंत इलाके में घेराबंदी कर दी और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। तलाशी के दौरान उसके पास से पिस्टल और कारतूस मिले। पूछताछ में उसकी पहचान भरथल गांव निवासी ईश्वर सिंह के रूप में हुई। पुलिस को पता चला कि ईश्वर सिंह नंदू गैंग का सक्रिय सदस्य है और उस पर उगाही, हत्या का प्रयास और सरकारी कर्मचारी पर हमला करने सहित सात संगीन मामले दर्ज हैं। पूछताछ में बदमाश ने बताया कि वह नंदू के निर्देश पर वारदात को अंजाम देता है। पुलिस आरोपित से पूछताछ कर हथियार मुहैया करवाने वाले की पहचान करने में जुटी है।

19 साल बाद परिवार में बेटी हुई तो मनाई ऐसी खुशी, हर कोई रह गया हैरान

जींदः 19 साल बाद परिवार में बेटी का जन्म होने की खुशी में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कालीरामन खाप के उप प्रधान सुरेंद्र की शादी के 19 साल के बाद बेटी का जन्म हुआ। बेटी के जन्म पर पूरे गांव का न्योता देने के साथ-साथ प्रदेश में जितनी भी खापें है उनको निमंत्रण दिया गया। सुरेंद्र ने बताया कि 19 साल के बाद बेटी हुई है जिसकी खुशी में कार्यक्रम आयोजित हुआ। बेटे से भी ज्यादा बेटी के जन्म पर खुशी है। बेटी का नाम भूमि रखा है। सुरेंद्र ने बताया कि थुपा तपा के 21 गांव है पूरे गांवों का न्योंता है। प्रदेश में जितनी भी खापें है उनको निमंत्रण दिया गया। कालीरामन खाप का न्योंता है वो किसी भी प्रदेश में हो। बेटी के जन्म पर इस तरह के कार्यक्रम से समाज में अच्छा संदेश जाएगा। बेटी के जन्म पर भी बेटे के जन्म की तरह कार्यक्रम करना चाहिए। बेटी हमारे लिए भाग्य वाली है। पूरा भाईचारा बेटी के जन्म पर एकत्रित हुआ। ग्रामीणों ने कहा कि सुरेंद्र द्वारा बेटी के जन्म पर जो कार्यक्रम किया है उसका संदेश पूरे समाज में जाएगा। बेटी के जन्म पर आसपास के गांव में कभी इस तरह का कार्यक्रम नहीं देखा था। बेटी आज बेटों से कम नहीं है। युवाओं को चाहिए कि वो रूढिवादी सोच को दूर करते हुए परिवार में बेटी होने पर खुशी मनाए। आप्रेशन सिंदूर में बेटियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। बेटियों को शिक्षाए खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ावा देना चाहिए।

मां–बेटे की धाकड़ जोड़ी का कमाल, नेशनल पावर लिफ्टिंग में जीते 6 गोल्ड मेडल

सोनीपतः हरियाणा के सोनीपत से माँ-बेटे की जोड़ी ने कमाल कर दिखाया है। ज्योति और उनके बेटे मौलिक ने नेशनल पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता में छह गोल्ड मेडल जीते। मुश्किल हालातों से गुजरने के बाद, ज्योति ने बेटे के साथ जिम जाना शुरू किया।दोनों ने मेहनत की और सफलता हासिल की। मौलिक ने सोशल मीडिया से दूरी बनाकर सफलता का मंत्र बताया। ज्योति जिनका वैवाहिक जीवन अनबन के चलते मुश्किल दौर से गुजरा, उन्होंने ने बेटे को सही राह पर रखने के लिए जिम ज्वाइन करवाया था। लेकिन कुछ समय बाद उनकी अपनी सेहत बिगड़ गई, तो उन्होंने भी बेटे के साथ जिम जाना शुरू कर दिया।घर और स्कूल की जिम्मेदारियों के बीच रोज 2 घंटे का समय निकालकर उन्होंने पावरलिफ्टिंग की तैयारी शुरू की और सिर्फ एक महीने की मेहनत के बाद प्रतियोगिता में उतर पड़ीं। ज्योति ने 63 किलोग्राम वेट कैटेगरी में शानदार प्रदर्शन करते हुए मैक्स कैटेगरी में 63 किग्रा, डेड लिफ्ट में 70 किग्रा, स्क्वाट में 75 किग्रा और बेंच प्रेस में 30 किग्रा वजन उठाकर तीन अलग-अलग इवेंट में गोल्ड मेडल जीते। वहीं, 11वीं कक्षा के छात्र मौलिक ने पहली बार नेशनल पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता में भाग लिया ।मौलिक का मानना है कि सोशल मीडिया और नशे से दूरी बनाकर, माता-पिता के साथ दोस्त की तरह रहकर और सेहत पर ध्यान देकर ही असली सफलता हासिल की जा सकती है। ज्योति और मौलिक ने यह साबित कर दिया है कि अगर हौसले बुलंद हों तो कोई भी चुनौती बड़ी नहीं होती। अब उनका अगला सपना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पावरलिफ्टिंग में भारत का नाम रोशन करना है।

हरियाणा के सोनीपत से माँ-बेटे की जोड़ी ने कमाल कर दिखाया है। ज्योति और उनके बेटे मौलिक ने नेशनल पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता में छह गोल्ड मेडल जीते। मुश्किल हालातों से गुजरने के बाद, ज्योति ने बेटे के साथ जिम जाना शुरू किया।

हरियाणा में बह रही इस नदी का जलस्तर पहुंचा खतरे के निशान से ऊपर , हो न जाएं कोई बड़ा नुक्सान

चंडीगढ़: बीती मध्यरात्रि टांगरी नदी में जल स्तर 9.5 फुट (लगभग 20,900 क्यूसिक) तक पहुंच - गया था, जो खतरे के निशान 7 फुट (15,400 क्यूसेक) से अधिक है। पिछले वं वर्षों में इतनी मात्रा में पानी आने पर अम्बाला छावनी की कई कालोनियां जलमग्न हो जाती थीं और करोड़ों रुपए न का नुकसान होता था लेकिन समय रहते न खुदाई होने से और विभाग की सूझबूझ से खतरा टल गया। उन्होंने बताया कि इस वं बार सिंचाई विभाग ने बरसात से पहले नदी की खुदाई का कार्य शुरू किया, जिसकी न वजह से पानी सुरक्षित रूप से बह गया पं और हजारों लोगों को बड़ी राहत मिली।

सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी ने बताया कि बरसात शुरू होने से पहले विभाग ने नदी के तल को गहरा और चौड़ा करने का कार्य प्रारंभ किया था। हालांकि, बारिश के कारण फिलहाल केवल आधा कार्य ही पूरा हो पाया, लेकिन इससे नदी की जल निकासी क्षमता में काफी वृद्धि हुई है। बरसात का मौसम समाप्त होते ही हम यह कार्य पूर्ण कर देंगे। 6 अगस्त को सुबह 11 बजे नदी में 11,000 क्यूसेक पानी था, जो शाम 4 बजे तक 15,400 क्यूसेक और मध्यरात्रि तक 20,900 क्यूसेक हो गया। पहले ऐसे जलस्तर पर न्यू टैगोर गार्डन, न्यू एकता विहार, प्रभु प्रेमपुरम, रामपुर, सरसेहड़ी, चंदपुरा और करधान जैसे क्षेत्रों में पानी भर जाता था, लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ।

हरियाणा में यूपी पुलिस की टीम पर किया पथराव, गाड़ी की टक्कर से रिटायड एसआई की मौत

रोहतकः हरियाणा के रोहतक में यूपी पुलिस पर पथराव करने का प्रकाश में आया है। घटना शनिवार देर रात की है। यूपी पुलिस की टीम एक युवती को लेने के लिए रोहतक पहुंची थी। इस वारदात में एक सिपाई और महिला के घायल होने का भी समाचार है।वहीं जब यूपी पुलिस ने बचने के लिए अपनी गाड़ी भगाई तो गाड़ी की टक्कर से एक रिटायर्ड एसआई की मौत हो गई। मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस हालात पर काबू पाया। घटना रोहतक के राजीव नगर की है।

प्राप्त जानकारी अनुसार राजीव नगर निवासी प्रियम पंजाब के जीरकपुर में रहता था और सोशल मीडिया पर उसका संपर्क हाथरस यूपी की अंजलि के साथ हुआ। मई माह में दोनों ने आर्य समाज मंदिर में शादी कर ली। अंजलि के पिता बलबीर सिंह व भाई यूपी पुलिस में तैनात हैं। अंजलि के पिता ने फिरोजाबाद के थाने में प्रियम पर अंजलि का अपहरण करने का केस दर्ज करवा रखा है। प्रियम व अंजलि ने पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट में अर्जी दायर करते हुए सुरक्षा की मांग की थी, जिसके बाद मोहाली एसपी को सुरक्षा देने के आदेश दिए गए। वहीं, अंजलि के पिता ने इलाहबाद हाईकोर्ट में इस फैसले को रद्द करने की याचिका लगाई, लेकिन इलाहबाद हाईकोर्ट ने गिरफ्तारी पर स्टे आर्डर दे दिया, जिसके कारण अंजलि के पिता व भाई को निराशा हुई। शनिवार रात को जब यूपी पुलिस अंजलि को लेने के लिए राजीव नगर आई। यूपी पुलिस ने कहा कि अंजलि के बयान कोर्ट में दर्ज करवाने हैं और प्रियम पर अपहरण का आरोप है, इसलिए उसे भी साथ लेकर जाएंगे। इसी बात को लेकर विवाद बढ़ गया और लोगों ने पुलिस टीम पर पथराव करना शुरू कर दिया। उनकी गाड़ी को भी क्षतिग्रस्त कर दिया। डीएसपी गुलाब सिंह ने बताया कि अपहरण के केस में यूपी पुलिस रोहतक आई थी और युगल को अपने साथ लेकर जाना चाहती थी। इसी बात को लेकर हंगामा हो गया। रोहतक पुलिस के रिटायर एसआई तिलकराज की मौत हो गई, जो गाड़ी की टक्कर लगने से बताई जा रही है। इस मामले में पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से पता चलेगा कि मौत कैसे हुई है। वहीं, यूपी पुलिस का एक जवान भी घायल है।

20 लाख दो वर्ना गोली मार दूंगा', हरियाणा में लेडी डॉक्टर को मिली धमकी

फर्जी डॉक्टर पकड़े जाने के बाद पीजीआई ने इंटर्नस को लेकर उठाया बड़ा कदम

रोहतकः पीजीआई में इंटर्न अब बायोमीट्रिक हाजिरी लगाएंगे। ओपीडी के छोटे ऑपरेशन थिएटर (माइनर ओटी) में पकड़े गए फर्जी डॉक्टर के बाद पीजीआई निदेशक ने यह सख्त निर्देश जारी किए हैं। इससे इंटर्न की व्यक्तिगत उपस्थिति दर्ज होगी व इस तरह के फजीर्वाड़े पर अंकुश लगेगा। हर इंटर्न की बायोमीट्रिक हाजिरी की व्यवस्था जल्द लागू की जाएगी। डॉ. कृष्ण की जगह 12वीं पास साहद ड्यूटी देते पकड़े जाने के बाद पीजीआई प्रशासन सख्त हो गया है। इसी कड़ी में संस्थान में 250 इंटर्न पर नजर रखने के लिए इनकी बायोमीट्रिक हाजिरी की तैयारी की है। इन सभी को रोजाना सुबह आने के बाद व शाम को जाने से पहले बायोमीट्रिक मशीन पर हाजिरी दर्ज करनी होगी। ऐसा नहीं करने पर अनुपस्थिति मानी जाएगी। इसके अलावा संस्थान की अनुशासनात्मक कमेटी भी सोमवार को मामले की जांच करेगी। त्योहार व रविवार के अवकाश के चलते संस्थान में फर्जी डॉक्टर बनकर आया आरोपी पकड़ा गया है। इस मामले की जांच की जाएगी। इंटर्न पर नजर रखने व इनकी हाजिरी सुनिश्चित करने के लिए बायोमीट्रिक हाजिरी लगेगी। इसके निर्देश दे दिए गए हैं। डॉ. एसके सिंघल, निदेशक पीजीआई ने बताया कि यह है मामला पीजीआई के छोटे ऑपरेशन थिएटर में सोनीपत के गांव निजामपुर माजरा का 12वीं पास साहद वीरवार को पकड़ा गया था। वह अपने इंटर्न दोस्त रोहतक के गांव कंसाला निवासी डॉ. कृष्ण की जगह ड्यूटी दे रहा था। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। पीजीआई प्रशासन भी मामले में कार्रवाई कर रहा है।

हरियाणा में 443 पदों के लिए फिर निकली भर्ती, जानें कब से कब तक होंगे आवेदन

हरियाणा : हरियाणा से खबर आ रही है कि प्रदेश में कृषि विकास अधिकारियों के 785 पदों के लिए चल रहे ऑनलाइन आवेदन के बीच हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC) द्वारा विभिन्न विभागों में द्वितीय श्रेणी के 443 और पदों के लिए भर्ती निकाली गई है। इन पदों पर भर्तियां बताया जा रहा है कि सहायक जिला न्यायवादी के 255 और लोक निर्माण, स्थानीय निकाय तथा पंचायत विभाग में अभियंताओं के 153 पदों पर भर्तियां होंगी। इसी तरह वित्त विभाग में 13 अप्रैल 2023 को निकली ट्रेजरी ऑफिसर और असिस्टेंट ट्रेजरी ऑफिसर के 35 पदों की भर्ती के लिए संशोधित नियमों के अनुसार दोबारा आवेदन मांगे गए हैं। जानें कब से कब तक होंगे आवेदन ट्रेजरी ऑफिसर और असिस्टेंट ट्रेजरी ऑफिसर के लिए कल से एक सितंबर की शाम पांच बजे तक आवेदन किए जाएंगे। सहायक जिला न्यायवादी के लिए 13 अगस्त से दो सितंबर आवेदन शुरू होंगे। वहीं लोक निर्माण, स्थानीय निकाय तथा पंचायत विभाग में सहायक अभियंताओं (सिविल), म्यूनिसिपल इंजीनियर (सिविल) और उपमंडल अभियंता (सिविल) के लिए 12 अगस्त से एक सितंबर तक आवेदन किए जा सकते हैं।

भिवानी के हांसी गेट पर 6 दुकानों में भीषण आग, करोड़ों का नुकसान

भिवानीः भिवानी के हांसी गेट स्थित बैग हाउस की करीब 6 दुकानों में रविवार सुबह अचानक आग लग गई। आग की लपटें और धुआं उठता देख आसपास के लोगों ने तुरंत पुलिस और दमकल विभाग को सूचना दी। सूचना मिलते ही दमकल विभाग की गाड़ियां और पुलिस टीम मौके पर पहुंची। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया, लेकिन तब तक हांसी गेट की इन दुकानों को आग ने अपनी चपेट में ले लिया था, जिससे दुकानों में रखा सामान जलकर राख हो गया और करीब 50-60 लाख रुपए का भारी नुकसान हुआ। आग लगने का कारण शार्ट सर्किट बताया जा रहा है। शुरूआत में हांसी गेट स्थित बैग हाउस की एक दुकान में आग लगी, जो तेजी से फैलकर आसपास की दुकानों और पहली- दूसरी मंजिल की दुकानों तक पहुँच गई। इस हादसे के बाद आसपास के लोग भी एकत्रित हो गए। हिमांशु जैन ने बताया कि उन्हें आग लगने की सूचना फोन पर मिली, जिसके बाद परिवार के सदस्य तुरंत मौके पर पहुंचे। दमकल विभाग की गाड़ियां करीब ढाई से तीन घंटे की मेहनत के बाद आग पर काबू पा सकीं। उन्होंने कहा कि डबल स्टोरी दुकानों में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया है। उनके भाई को चौकीदार ने आग लगने और धुआं उठने की जानकारी दी थी। जब उनके भाई ने दुकान का शटर खोला तो आग और भी बढ़ गई। इसके चलते ऊपर-नीचे दोनों मंजिलों की दुकानें बुरी तरह प्रभावित हुईं और आस-पास की दुकानों को भी नुकसान हुआ।

3 महीने पहले हुई थी शादी...अब सड़क हादसे में गई नेवी जवान की जान, 4 दिन पहले छुट्टी पर आया था घर

महेंद्रगढ़ : महेंद्रगढ़ में दर्दनाक हादसा देखने को मिला जहां इंडियन नेवी के जवान 26 वर्षीय रवि कुमार की सड़क हादसे में मौत हो गई। रवि चार दिन पहले ही रक्षाबंधन की छुट्टी लेकर घर आए थे।वह शनिवार देर रात अपने दोस्त को छोड़कर बाइक से घर लौट रहे थे। तभी तेज रफ्तार ट्रक ने उन्हें टक्कर मार दी। हादसे में जवान की मौके पर ही मौत हो गई तथा ट्रक चालक अपने ट्रक को मौके पर छोड़कर फरार हो गया।

हादसे के बाद ही रात को ही सोशल मीडिया ग्रुपों पर वीडियो वायरल हो गई। रवि जो बाइक लिए थे। उसका नारनौल का नंबर था। जिससे लोगों ने उनकी पहचान कर कर ली। हादसे के बाद रात को मौके पर पुलिस पहुंची। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर उसको पोस्टमॉर्टम के लिए कनीना अस्पताल की मॉर्चरी में रखवा दिया था।

3 महीने पहले हुई थी शादी

वहीं मृतक रवि के बड़े भाई प्रवीण ने बताया कि हमारे तीनों भाइयों में यह सबसे छोटा था और अप्रैल में ही उसकी शादी हुई थी। वह चार दिन पहले ही छुट्टी पर आया था और बीती रात को अपने दोस्त कनीना छोड़कर वापस लौट

फर्जी डॉक्टर पकड़े जाने के बाद पीजीआई ने इंटर्नस को लेकर उठाया बड़ा कदम

रोहतकः पीजीआई में इंटर्न अब बायोमीट्रिक हाजिरी लगाएंगे। ओपीडी के छोटे ऑपरेशन थिएटर (माइनर ओटी) में पकड़े गए फर्जी डॉक्टर के बाद पीजीआई निदेशक ने यह सख्त निर्देश जारी किए हैं। इससे इंटर्न की व्यक्तिगत उपस्थिति दर्ज होगी व इस तरह के फजीर्वाड़े पर अंकुश लगेगा। हर इंटर्न की बायोमीट्रिक हाजिरी की व्यवस्था जल्द लागू की जाएगी। डॉ. कृष्ण की जगह 12वीं पास साहद ड्यूटी देते पकड़े जाने के बाद पीजीआई प्रशासन सख्त हो गया है। इसी कड़ी में संस्थान में 250 इंटर्न पर नजर रखने के लिए इनकी बायोमीट्रिक हाजिरी की तैयारी की है। इन सभी को रोजाना सुबह आने के बाद व शाम को जाने से पहले बायोमीट्रिक मशीन पर हाजिरी दर्ज करनी होगी। ऐसा नहीं करने पर अनुपस्थिति मानी जाएगी। इसके अलावा संस्थान की अनुशासनात्मक कमेटी भी सोमवार को मामले की जांच करेगी। त्योहार व रविवार के अवकाश के चलते संस्थान में फर्जी डॉक्टर बनकर आया आरोपी पकड़ा गया है। इस मामले की जांच की जाएगी। इंटर्न पर नजर रखने व इनकी हाजिरी सुनिश्चित करने के लिए बायोमीट्रिक हाजिरी लगेगी। इसके निर्देश दे दिए गए हैं।

डॉ. एसके सिंघल, निदेशक पीजीआई ने बताया कि यह है मामला पीजीआई के छोटे ऑपरेशन थिएटर में सोनीपत के गांव निजामपुर माजरा का 12वीं पास साहद वीरवार को पकड़ा गया था। वह अपने इंटर्न दोस्त रोहतक के गांव कंसाला निवासी डॉ. कृष्ण की जगह ड्यूटी दे रहा था। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। पीजीआई प्रशासन भी मामले में कार्रवाई कर रहा है।

पीजीआई में इंटर्न अब बायोमीट्रिक हाजिरी लगाएंगे। ओपीडी के छोटे ऑपरेशन थिएटर (माइनर ओटी) में पकड़े गए फर्जी डॉक्टर के बाद पीजीआई निदेशक ने यह सख्त निर्देश जारी किए हैं। इससे इंटर्न की व्यक्तिगत

खैर तस्करों का आतंक, वन विभाग के कर्मचारियों से की मारपीट, फिर तोड़ी गाड़ी

यमुनानगरः गांव खिल्लेवाला में जंगल से खैर के पेड़ों की तस्करी करने वालों ने वन विभाग के कर्मचारियों से मारपीट की और उनकी गाड़ी तोड़कर भाग निकले।थाना प्रतापनगर पुलिस को दी शिकायत में वन अधिकारी राजीव कांबोज ने बताया कि सात अगस्त की रात वह टीम के तस्कर गांव खिल्लेवाला के साथ लगते जंगल से खैर की लकड़ी काटकर चोरी करके ले जा रहे हैं। इस पर उन्होंने नाका लगाकर खैर तस्करों की तलाश शुरू कर दी। देर रात उनको एक कार आती दिखाई दी। उन्होंने कार को रुकने का इशारा किया तो उसमें सवार आरोपियों ने वन विभाग के कर्मियों से मारपीट की साथ ही विभाग की गाड़ी भी तोड़ दी। बाद में आरोपी अपनी कार में सवार होकर भाग गए। पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। पुलिस की जांच के बाद आरोपियों की पहचान जमशेद उर्फ जग्गू, कासिम उर्फ पोली, इकराम, वलीदीन व महबूब उर्फ बूबा के रूप में हुई। जांच अधिकारी एसआई नर सिंह ने बताया कि आरोपियों को जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

पहले सीएम...अब पीएम 15 अगस्त को महेंद्रगढ़ के युवा सरपंच को करेंगे सम्मानित, ग्राम विकास में किए कई काम

नारनौल : पिछड़ेपन का दाग झेल रहे महेंद्रगढ़ जिले के युवा सरपंच ने ठाना है कि गांव में विकास कर पिछड़ेपन का दाग हटाना है। जी हां महेंद्रगढ़ जिले की अटेली विधानसभा के गांव नीरपुर राजपूत के युवा सरपंच रतनपाल सिंह चौहान ने ग्राम विकास कर सबको चकाचौंध कर दिया है। इस ग्राम विकास को देख प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी चंडीगढ़ में सरपंच को मार्च 2025 में सम्मानित कर चुके हैं तो अब देश के प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त को सरपंच को सम्मानित करने के लिए दिल्ली का निमंत्रण भेजा है। गांव के युवाओं ने कहा कि बुजुर्गों का मार्गदर्शन और युवाओं की इच्छा शक्ति अगर मजबूत हो तो बड़ी से बड़ी मुश्किल को पार कर विकास कार्य करवाए जा सकते हैं ऐसे ही हमारे युवा सरपंच ने पंचायत और गांव के युवाओं की कमेटी बनाकर विकास कार्यों को अमली जामा पहनाया है। सरकार से भी हमें समय-समय पर सहायता और मार्गदर्शन मिलता रहा है। वहीं गांव के युवा सरपंच रतनपाल सिंह चौहान ने कहा कि गांव के विकास कार्य करवाने में अहम भूमिका सीएसआर फंड की रही तकरीबन डेढ़ से 2 करोड़ रुपए के सीएसआर फंड उन्हें मिले और उनसे विकास कार्य करवाने में उन्हें काफी मदद मिली है, साथ ही सरकार ने भी मदद की है और अब उम्मीद है कि सरकार उनकी और भी मदद करेगी, ताकि विकास कार्य करवाए जा सके। उन्होंने कहा कि धीरे-धीरे अब नशा ग्रामीण आंचल में भी पैर पसारने लगा है। इससे युवाओं को बचाने के लिए खेल-कूद से बेहतर कुछ नहीं है। इसके लिए उन्होंने गांव में एक डे नाइट खेल स्टेडियम भी बनाया है। युवा इसमें खेल कर अपनी खेल प्रतिभा निखार रहे हैं और सामाजिक कुरीतियों से दूर रहने में यह खेलकूद उनकी मदद करता है।

हरियाणा में इन बच्चों को मिलेगी 4 हजार रुपए महीना आर्थिक मदद, सरकार ने शुरू की ये खास योजना

हरियाणाः हरियाणा की नायब सैनी सरकार ने मुश्किल परिस्थितियों में जीवनयापन कर रहे बच्चों के भविष्य को संवारने के लिए स्पॉन्साशिप योजना चलाई है। सीएम नायब सैनी के दिशा निदेर्शों पर महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा यह योजना बाल कल्याण को ध्यान में रखते हुए संचालित की जा रही है।

जिला कार्यक्रम अधिकारी संगीता यादव ने इस योजना के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि यह योजना उन बच्चों के लिए है, जो एकल अभिभावक यानि केवल अपनी मां के साथ रह रहे हैं या फिर जिनके माता पिता गंभीर बीमारी से ऐसे बच्चे जिन्हें बाल कल्याण समिति द्वारा "देखरेख एवं संरक्षण" की श्रेणी में रखा गया है। उन्हें भी इस योजना के तहत 4 हजार रुपए प्रति महीना की आर्थिक सहायता राशि दी जाएगी। यह सहायता राशि जिला बाल संरक्षण इकाई के माध्यम से प्रदान की जा रही है। आवेदन के लिए योग्यता प्रदेश सरकार द्वारा निर्धारित मापदंडों पर खरा उतरने वाले परिवारों के बच्चों को ही इस योजना का लाभ मिलेगा.

ग्रामीण क्षेत्र में परिवार की सालाना आमदनी 72 हजार रुपए से कम होनी चाहिए, जबकि शहरी क्षेत्र में यह सीमा 96 हजार रुपए तय की गई है. लाभ लेने वाले परिबार में अधिकतम 2 बच्चे हो, जिनकी आयु 18 साल से कम हो. आवेदक बच्चे जिले के मूल निवासी होने चाहिए.

फसल अवशेष प्रबंधन के कृषि यंत्रों के लिए आवेदन करने की ये है लास्ट डेट, फटाफट चेक करें किसान

चंडीगढ़ : हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने वर्ष 2025-26 के दौरान किसानों के लिए व्यक्तिगत श्रेणी में आर. के. वी.आई. स्कीम के फसल अवशेष प्रबंधन घटक के तहत कृषि यंत्रों के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए हैं। इनमें किसान स्ट्रा-बेलर, हे-रेक, एस.एम.एस., हेप्पी सीडर, स्मार्ट सीडर, स्ट्रा-चोपर, मल्चर, शर्ब मास्टर, रोटरी स्लेशर, रिर्वसीब्ल एम.बी. प्लो, जीरो ड्रील, सुपर सीडर, सरफेस सीडर, ट्रैक्टर माऊंटेड लोडर (बिना ट्रैक्टर), ट्रैक्टर ड्रान टैडर मशीन, कॉप-रीपर पर 50 प्रतिशत अनुदान पर प्राप्त कर सकते हैं।

इसके लिए किसान ऑनलाइन आवेदन विभागीय पोर्टल एग्री हरियाणा डॉट जी.ओ.वी. डॉट इन पर 20 अगस्त तक आवेदन कर सकते हैं। विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि किसान द्वारा जिस कृषि यंत्र पर आवेदन किया जा रहा है। उस यंत्र पर किसान ने किसी भी स्कीम के तहत पिछले 3 वर्षों में अनुदान का लाभ न लिया हो। एक किसान अधिकतम 4 विभिन्न प्रकार के कृषि यंत्र के लिए आवेदन कर सकता है, लेकिन उसे अनुदान का लाभ एक ही मशीन पर दिया जाएगा।

हिसार में EV कार ने 2 गायों को कुचला, 100 मीटर तक घसीटा... हादसे के बाद आरोपी फरार

हिसारः रविवार सुबह एक दिल्ली नंबर की इलेक्ट्रिक कार ने पुल के किनारे बैठी दो गायों को कुचल दिया। हादसे में दोनों गायों की मौत हो गई। ये हादसा हिसार में डाबड़ा चौक पर हुआ है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, टक्कर के बाद कार सवार चालक सहित 2-3 लोग मौके से फरार हो गए। मामले की सूचना मिलने पर पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और कार का जब्त कर कार्रवाई शुरू की। पुलिस को जांच में पता चला कि कार सवार की पहचान हिसार के सेक्टर 14 निवासी व्यापारी सोमनाथ के नाम पर हुई है। फिलहाल पुलिस आरोपियों की तलाश कर रही है।

हादसा नहीं, जानबूझकर मारी गई टक्करः गोरक्षक

दूसरी ओर घटना की सूचना मिलते ही गोरक्षक दल मौके पर पहुंच गया। गोरक्षक मोहित शर्मा ने बताया कि एक गाय को टक्कर मारने के बाद कार ने दूसरी गाय को लगभग 100 मीटर तक घसीटा। उन्होंने दावा किया कि कार तेज गति में थी और सवार लोग शराब के नशे में थे। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार के दोनों एयरबैग खुल गए।

प्रत्यक्षदर्शी पंकज बिश्नोई ने कहा कि गायें सड़क पर सामान्य रूप से बैठी थीं और देसी गाय यूं ही नहीं उठती, यह हादसा जानबूझकर किया गया लगता है। उन्होंने कहा कि गोरक्षक दल गायों का पोस्टमॉर्टम करवा कर आरोपियों पर कानूनी कार्रवाई की मांग करेगा। उन्होंने कहा कि हमने लिखित में नाम भी दे दिए हैं और गवाही देने को तैयार हैं। नगर निगम पर भी उठे सवाल उधर, बिश्नोई ने नगर निगम के पशु पकड़ो अभियान को पूरी तरह फेल बताया। उनका कहना है कि अगर आवारा पशुओं को समय रहते पकड़ा जाता, तो इस तरह की घटना नहीं होती।

भारतीय टीम ने किया कमाल, दो दशकों बाद अंडर-20 महिला एशियाई कप के लिए किया क्वालीफाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। यांगून (म्यांमार) -यांगून के थुवुन्ना स्टेडियम में ग्रुप डी के अपने अंतिम मुकाबले में मेजबान म्यांमार को 1-0 से हराकर भारत की अंडर-20 महिला राष्ट्रीय टीम ने एएफसी अंडर-20 महिला एशियाई कप के लिए क्वालीफाई कर लिया है। ऐसा 20 वर्षों में पहली बार हुआ है। विंगर पूजा के 27वें मिनट में किए गए गोल की बदौलत यंग टाइग्रेसेस ने थुवुन्ना स्टेडियम में मेजबान टीम के सामने जीत हासिल की और सात अंकों के साथ अपने ग्रुप में शीर्ष स्थान हासिल किया।

यह दो हाफ का खेल था, पहले हाफ में भारत का दबदबा रहा, जबकि दूसरे हाफ में म्यांमार ने दबदबा बनाए रखा। नेहा और सिबानी देवी नोंग्मीकापम ने तीसरे मिनट में ही मिलकर गोल कर दिया, जब सिबानी ने सिबानी देवी को एक क्रॉस दिया, जो गोल करने से बस कुछ ही इंच दूर थी। मेजबान टीम ने सारा दबाव झेलते हुए कुछ जवाबी हमले भी किए और नौवें मिनट में यिन लून इआन के सीने से टकराने के बाद, फॉरवर्ड सु सु खिन करीब पहुंच गईं। जैसे-जैसे मिनट बीतते गए मेजबान टीम ने खेल में अपनी पकड़ मज़बूत करनी शुरू कर दी, लेकिन भारत ने 30 मिनट से कुछ मिनट पहले पूजा के गोल की बदौलत बढ़त बना ली।

दाईं ओर से क्रॉस करने से पहले पूजा ने ही काउंटर पर हमला शुरू किया था। उनकी गेंद सभी से बच गई, लेकिन नेहा, जो दूसरी तरफ से थी, गेंद के सिरे तक पहुंचने में कामयाब रही और उसे वापस गोल में पहुंचा दिया। पूजा, जो तब तक गोलमुख तक पहुंच चुकी थीं, के पास प्रतिक्रिया करने का समय नहीं था और उन्होंने अपने धड़ से गेंद को गोल लाइन के पार पहुंचा दिया। इससे भारतीय खेमे में, कम से कम पहले हाफ के अंत तक घबराहट कम हो गई। यंग टाइग्रेसेस ने गेंद पर कब्जा बनाए रखा और ब्रेक तक अपनी मामूली बढ़त बनाए रखी।

दूसरे हाफ में स्थिति बिल्कुल अलग थी। घरेलू समर्थन से उत्साहित म्यांमार ने पूरी ताकत झोंक दी और भारतीय गोलकीपर मोनालिशा देवी को 48वें मिनट में सु सु खिन को रोकने के लिए एक बेहतरीन बचाव करना पड़ा। भारत ने म्यांमार के लगातार हमलों का सामना किया। मोनालिशा, जिन्होंने पिछले दो मैचों में एक भी गोल नहीं खाया था, को खेल के 10 मिनट बचे थे जब म्यांमार के सब्सटीट्यूट मो प्विंट फ्यू ने एई थेट फ्यू के क्रॉस को हेडर से गोलपोस्ट में मारा। गेंद लाइन पर तेजी से लुढ़कती रही, लेकिन भारतीय गोलकीपर ने छलांग लगाकर उसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया।

फ्यू ने एक बार फिर इस बार 90वें मिनट में, शुभांगी से टकराकर गोलपोस्ट से खेल से बाहर हो गई। कुछ ही सेकंड बाद भारत ने जवाबी हमला किया जब सिबानी ने सुलंजना राउल को एक क्रॉस भेजा, जो भी गोलपोस्ट से टकराया और उनका हेडर क्रॉस-बार से टकरा गया। मेजबान टीम के तमाम दबाव के बावजूद भारत ने अपनी बढ़त बरकरार रखी और दो दशकों में पहली बार क्वालीफिकेशन हासिल किया।

सैमसन ने टी20 में अपनी सफलता का श्रेय गंभीर को दिया

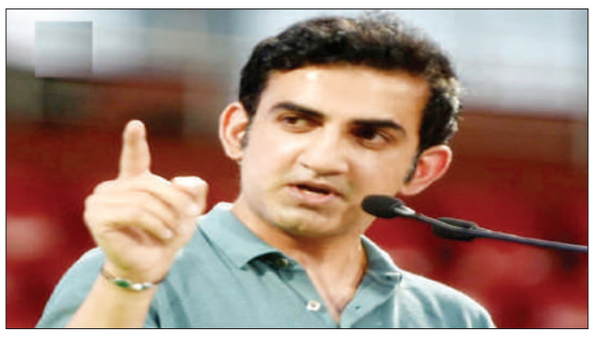

नई दिल्ली (एजेंसी)। अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन ने कहा है कि भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर के कारण ही वह टी20 क्रिकेट में सफल हो पाये हैं। सैमसन ने कहा कि गंभीर खिलाड़ियों का पूरा समर्थन करते हैं। सैमसन के अनुसार जब वह टीम में आये थे तब गंभीर ने उनसे कहा था कि उन्हें निडर होगर खेलना चाहिये क्योंकि टीम से बाहर होने से पहले 20 अवसर तो मिलेंगे ही। साथ ही कहा था कि जब वह 21 बार शून्य पर आउट होंगे तभी बाहर किया जाएगा। गंभीर के कोच बनने के बाद सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में तैयार टीम में सैमसन को सलामी बल्लेबाज की जिम्मेदारी मिली थी। सैमसन ने बाएं हाथ के बल्लेबाज अभिषेक शर्मा के साथ मिलकर एक मजबूत सलामी जोड़ी बनाकर अपने चयन को सही साबित किया। .

सैमसन ने कहा, 'यह बदलाव अचानक ही टी20 विश्व कप के बाद हुआ। गंभीर आये और सूर्यकुमार कप्तान बने। वहीं मुझे पारी की शुरुआत का अवर मिला। तभी सूर्यकुमार ने कहा कि आपके लिए एक अच्छा अवसर है। हमारे पास सात मैच हैं. मैं आपको सभी सात मैच सलामी बल्लेबाज के तौर पर खिलाऊंगा।' सैमसन ने कहा, 'मैंने इससे पहले श्रीलंका में दो मैच खेले थे पर रन नहीं बना पाया। ड्रेसिंग रूम में थोड़ा निराश था। तब गंभीर मेरे पास आए और पूछा कि क्या हुआ है? मैंने कहा, 'काफी समय बाद मुझे अवसर मिला पर मैं इसका लाभ नहीं उठा पाया।' उन्होंने कहा, कि निराश होने की जरुरत नहीं है। अगर आप 21 बार जीरो पर आउट हो गए, तभी मैं आपको टीम से बाहर करूंगा।' कप्तान और कोच की इन बातों ने निश्चित रूप से मेरा मनोबल बढ़ा और इससे मुझे मैदान पर उतरकर अच्छा प्रदर्शन करने में सहायता मिली.'

सैमसन अब अगले माह होने वाले एशिया कप के लिए टीम में जगह बनाने का प्रयास कर रहे हैं। सैमसन ने भारतीय टीम की ओर से 42 टी20 मैचों में 25.32 की औसत के साथ 861 रन बनाये हैं। उन्होंने इस प्रारुप में तीन शतक और दो अर्धशतक लगाए हैं।

डेविड वार्नर ने लंदन स्पिरिट को दिलाई पहली जीत, खेली 70 रनों पर नाबाद पारी

लंदन (एजेंसी)। लंदन स्पिरिट ने शनिवार (9 अगस्त) को वेल्श फायर पर 8 रनों की कड़ी जीत के साथ मेन्स हंड्रेड में अपना खाता खोलने में कामयाबी हासिल की। टूर्नामेंट के पहले मैच में अपने खराब बल्लेबाजी प्रदर्शन के बाद, लंदन स्पिरिट ने अनुभवी डेविड वार्नर की अगुवाई में शानदार वापसी की, जिन्होंने 70 रनों पर नाबाद रहते हुए बल्लेबाजी की। वेल्श फायर के सलामी बल्लेबाज जॉनी बेयरस्टो भी रन चेज में नाबाद रहे और अपनी टीम द्वारा बनाए गए आधे से ज्यादा रन बनाए, लेकिन फिर भी वे लड़खड़ा गए।

वार्नर पारी की शुरुआत में ही अच्छी फॉर्म में आ गए थे, लेकिन दूसरे छोर पर केन विलियमसन लड़खड़ा गए। आखिरकार उन्होंने मैदान पर छक्का जड़कर अपनी लय तोड़ी, लेकिन जोश हल के आउट होने के कारण ज़्यादा देर तक टिक नहीं पाए। पारी को आधे समय में एक बड़ा झटका तब लगा जब वार्नर और जेमी स्मिथ ने मिलकर क्रिस ग्रीन को तीन छक्के जड़कर आउट कर दिया। यह

सिलसिला जारी रहा और स्मिथ ने हल की गेंद पर एक और बड़ा छक्का जड़ा, उसके बाद एक चौका जड़ा, और फिर गेंदबाज ने इस पारी का अंत कर दिया।

इसके बाद एश्टन टर्नर की बारी आई और उन्होंने भी एक उपयोगी छक्का जड़ा। दूसरे छोर पर वार्नर ने रन बनाना जारी रखा और स्कोर को 160 के पार पहुंचाया, जिसका मतलब था कि लक्ष्य का पीछा करने वाली टीम के लिए एक ठोस शुरुआत जरूरी थी। हालांकि स्टीव स्मिथ और बेयरस्टो ने अपने पहले मैच में पहले विकेट के लिए 62 रन जोड़े थे, लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ क्योंकि ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी शुरुआत में ही स्कूप करने की कोशिश में थर्ड मैन पर आउट हो गए। दुर्भाग्य से वेल्श फायर के लिए, विकेटों के गिरने के साथ ही रन गति की शुरुआत हो गई।

धोनी से आगे निकल जाएंगे पंत, गिलक्रिस्ट भी पीछे छूट सकते हैं : आकाश चोपड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने कहा है कि अगर ऋषभ पंत भारत के लिए ज्यादा मैच खेलते हैं तो वह टेस्ट मैचों में महेंद्र सिंह धोनी के रनों की संख्या को पीछे छोड़ देंगे। टेस्ट मैचों में भारत के उप-कप्तान पंत फिलहाल मैनचेस्टर में इंग्लैंड के खिलाफ चौथे मैच में बल्लेबाजी करते हुए दाहिने पैर में लगी चोट से उबर रहे हैं।

पंत ने अब तक 47 टेस्ट मैचों में 44.50 की औसत से 3427 रन बनाए हैं। उनके शतकों की संख्या में आठ शतक शामिल हैं, जो धोनी के छह शतकों से दो ज़्यादा हैं, हालांकि धोनी ने 90 टेस्ट मैच खेले हैं। चोपड़ा ने सवाल उठाया है कि क्या यह कहना सही होगा कि पंत भारत के लिए टेस्ट खेलने वाले सबसे महान विकेटकीपर-बल्लेबाज हैं।

उन्होंने कहा, 'खेलों और रनों की संख्या के मामले में एमएस धोनी शीर्ष पर हैं। उन्होंने 90 मैच, 144 पारियां

खेली हैं जिनमें 38.09 की औसत से 4876 रन बनाए हैं और उनके नाम छह शतक हैं। ऋषभ पंत ने पिछले पांच सालों में छह शतक लगाए हैं।' चोपड़ा ने कहा, 'अगर हम कुल मिलाकर देखें, तो ऋषभ पंत आठ शतक लगा चुके हैं और एमएस धोनी छह शतक लगा चुके हैं। ऋषभ पंत पहले ही (रनों की संख्या के मामले में) दूसरे स्थान पर हैं। वह एमएस धोनी से 1400 रन पीछे हैं और लगभग आधे मैच खेल चुके हैं। अगर वह और खेलेंगे, तो जाहिर है कि वह एमएस धोनी से आगे निकल जाएंगे।'

इंग्लैंड के हालिया टेस्ट दौरे की 7 पारियों में पंत ने 68.42 की शानदार औसत से 479 रन बनाए जिसमें लीड्स के हेडिंग्ले में सीरीज के पहले मैच में लगाए गए दो शतक भी शामिल हैं। उन्होंने कहा, 'अगर हम इंग्लैंड में किसी विकेटकीपर द्वारा बनाए गए सबसे ज़्यादा रनों पर नजर डालें, तो वह इंग्लैंड में 1000 रन बनाने वाले इकलौते खिलाड़ी हैं। उन्होंने चार शतक और पांच अर्धशतक लगाए हैं। उन्होंने 13 मैचों और 24 पारियों में 1000 से ज़्यादा रन बनाए हैं। इंग्लैंड में उनकी मूर्तियां बननी शुरू हो सकती हैं।'

चोपड़ा ने आगे कहा, 'अगर हम दुनिया के अब तक के सभी टेस्ट विकेटकीपरों की सूची देखें, तो एडम गिलक्रिस्ट ने 96 मैचों में 47.60 की औसत से 5570 रन बनाए हैं। वह उनसे काफी आगे हैं। हालांकि गिलक्रिस्ट भी पीछे छूट सकते हैं क्योंकि पंत उनसे लगभग 2250 रन पीछे हैं। बिना किसी संदेह के भारत के अब तक के नंबर 1 विकेटकीपर-बल्लेबाज और विश्व क्रिकेट में, वह सबसे बेहतरीन और शायद सर्वश्रेष्ठ में से एक बनकर उभरेंगे।'

बेंगलुरु में 80 हजार दर्शकों की क्षमता वाला नया स्टेडियम बनेगा : सिद्धारमैया

बेंगलुरु । कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कहा है कि बेंगलुरु में नया क्रिकेट स्टेडियम बनाया जाएगा। इस स्टेडियम की क्षमता 80 हजार दर्शकों होगी और ये अहमदाबाद स्थित नरेंद्र मोदी स्टेडियम के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम होगा। हाल में चिन्नास्वामी स्टेडिमय में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की जीत के बाद हुए समारोह में जगह कम होने के बाद हुए हादसे के बाद नये स्टेडियम को बनाने की मांग उठी थी। जिससे सबक लेते हुए सिद्धारमैया ने नया स्टेडयम बनाने की घोषण कर दी। इस स्टेडियम को बनाने के लिए कर्नाटक हाउसिंग बोर्ड की सूर्या सिटी, बोम्मासंद्रा के प्रस्ताव को मंजूरी मिल गयी है। इसमें 1650 करोड़ रुपए की लागत आने का अनुमान है। ये स्टेडियम 100 एकड़ में बनाया जाएगा और इस परियोजना का पूरा खर्च कर्नाटक हाउसिंग बोर्ड उठाएगा। इसमें केवल क्रिकेट मैदान ही नहीं, बल्कि आठ इनडोर और आठ आउटडोर खेलों की सुविधाएं, आधुनिक जिम, ट्रेनिंग सेंटर, स्विमिंग पूल, गेस्ट हाउस, हॉस्टल, होटल और अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के लिए एक कन्वेंशन हॉल भी होगा।

वॉन बोले अभी सचिन से बेहतर नहीं हुए हैं रुट

लंदन । इंग्लैंड के अनुभवी बल्लेबाज जो रुट ने हाल ही भारतीय टीम के खिलाफ सीरीज में शानदार बल्लेबाजी करते हुए कई अहम रिकार्ड अपने नाम किये हैं। जिसके बाद से ही दावा किया जा रहा है कि वह भारतीय टीम के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर से भी अच्छे हैं और सबसे अधिक रनों का तेंदुलकर का रिकार्ड भी वह तोड़ सकते हैं। अभी वह सबसे अधिक रनों के मामले में दूसरे नंबर पर हैं। इसी को लेकर जब इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन से पूछा गया कि क्या रुट सचिन से बेहतर हैं तो वॉन ने कहा कि अभी नहीं। उन्होंने कहा कि रूट ने अभी तक 158 टेस्ट मैच खेले हैं। अगर बात सचिन के 200 में से पहले 158 टेस्ट मैचों की करें तो, रूट कई मामलों में अभी भी भारतीय बल्लेबाज से पीछे हैं। उदाहरण के के लिए 158 टेस्ट के बाद सचिन का औसत 54.75 का था, जबकि रूट का औसल 51.29 का है। तेंदुलकर के नाम जहां 158 टेस्ट मैचों में 42 शतक थे, वहीं रूट ने अभी तक इतने ही मैचों में 39 शतक लगाये हैं। हाल ही में संपन्न हुई 5 मैच की टेस्ट सीरीज में रूट ने 537 रन बनाये और वह सीरीज में शुभमन गिल के बाद सबसे ज्यादा रन बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज रहे। इससे वह टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की दौड़ में लंबी छलांग लगाकर दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। रूट ने इस दौरान राहुल द्रविड़, जैक कैलिस और रिकी पोंटिंग को पीछे छोड़ा अब उनके आगे केवल तेंदुलकर ही हैं। तेंदुलकर ने अपने टेस्ट करियर में कुल 15921 रन बनाए हैं, वहीं जो रूट 13543 रनों के साथ दूसरे पायदान पर पहुंच गए हैं। दोनों के बीच अब सिर्फ 2378 रनों का अंतर रह गया है।

जिंजर के चार विकेट, ऑस्ट्रेलिया ए ने भारत ए को हराकर टी20 सीरीज 3-0 से जीती

मैके (एजेंसी)। सियाना जिंजर के 16 रन देकर 4 विकेट की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ए ने रविवार को मैके के ग्रेट बैरियर रीफ एरिना में भारत ए को चार रन से हराकर टी20 सीरीज में 3-0 से क्लीन स्वीप किया। भारत ए को दूसरे टी20 में 114 रनों से मिली करारी हार के ठीक एक दिन बाद मेहमान टीम ने गेंदबाजी में बेहतर प्रदर्शन करते हुए ऑस्ट्रेलिया ए को 144/8 पर रोक दिया जिसमें प्रेमा रावत और राधा यादव ने तीन-तीन विकेट लिए।

सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने 25 गेंदों में छह चौकों और एक छक्के की मदद से 41 रनों की तेज पारी खेलकर टीम की जीत की नींव रखी। लेकिन क्वींसलैंड जिंजर की 20 वर्षीय ऑलराउंडर सियाना ने आठवें ओवर में शेफाली को आउट करके और 15वें ओवर में राघवी बिष्ट को स्टंप आउट

करके मैच का रुख ऑस्ट्रेलिया ए के पक्ष में कर दिया।

इसके बाद सियाना ने 19वें ओवर में राधा और सजाना सजीवन को आउट किया, जिन्होंने सिर्फ तीन रन दिए और मेहमान टीम को जीत से 15 रन दूर छोड़ दिया। पुछल्ले बल्लेबाज क्रीज पर थे, जिसका टेस फ्लिंटॉफ ने आखिरी ओवर में बखूबी बचाव किया और ऑस्ट्रेलिया ए को कड़ी टक्कर देते हुए जीत दिलाई। भारत ए ने 140/8 का स्कोर बनाया।

इससे पहले एलिसा हीली ने 21 गेंदों पर 27 रन बनाए, जिसमें तीन चौके और एक छक्का शामिल था। उन्होंने एक दिन पहले ही 70 रनों की तूफानी पारी खेली थी। ताहलिया विल्सन (14) और अनिका लियरॉयड (22) ने अच्छी शुरुआत की, जबकि मैडलिन पेना ने 32 गेंदों पर 39 रनों की पारी खेली। इसके बाद सियाना ने 7 गेंदों पर नाबाद 17 रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया ए को 144/8 के प्रतिस्पर्धी स्कोर तक पहुंचाया। इसके बाद उन्होंने अंत में गेंदबाजी में भी कमाल दिखाया और मेजबान टीम को लगातार तीसरी जीत दिलाई। दोनों टीमें अब बुधवार को होने वाले पहले वनडे के लिए ब्रिस्बेन जाएंगी।

नीरज और अरशद के बीच सिलेसिया डायमंड लीग में नहीं होगा मुकाबला

दोनो के नाम प्रवेश सूची में नहीं

मुम्बई । इस माह 16 अगस्त को पोलैंड में होने वाली सिलेसिया डायमंड लीग एथलेटिक्स स्पर्धा में भारत के स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा और पाकिस्तान के अरशद नदीम के बीच अब मुकाबला देखने को नहीं मिलेगा। इसका कारण है कि इस प्रतियोगित की प्रवेश सूची में इनके नाम नहीं हैं। वहीं इससे पहुले जुलाई में विश्व एथलेटिक्स ने जुलाई में कहा था कि दोनों प्रतिद्वंद्वी अगस्त 2024 में पेरिस ओलंपिक फाइनल के बाद सिलेसिया में पहले बार आमने-सामने आने वाले थे। अब संभावना है कि नीरज चोपड़ा और अरशद नदीम की अगली भिड़ंत सितंबर में टोक्यो में आयोजित होने वाली विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में होगी। अरशद ने पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक जबकि नीरज ने रजत पदक जीता। नीरज ने हाल ही में दोहा डायमंड लीग में भाग लिया था पर वहां अरशद नहीं आये थे। वहीं इससे पहले 24 मई को होने वाले एनसी क्लासिक में इन दोनो का मुकाबला होना था पर भारत-पाक के बीच तनाव के कारण अरशद को उससे बाहर कर दिया गया था। पिछले महीने लंदन में अरशद नदीम की काफ सर्जरी हुई थी। इस कारण भी व कई टूर्नोमेंटों से बाहर थे। अरशद नदीम के कोच सलमान बट ने बताया नदीम अब सितंबर में टोक्यो में होने वाली विश्व चैम्पियनशिप की तैयारी पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। नीरज इस साल अच्छे फॉर्म में रहे है। उन्होंने मई 2025 में दोहा डायमंड लीग में पहली बार 90.23 मीटर का थ्रो किया था।

रोहित-कोहली को कब तक वनडे प्रारूप में खेलना चाहिए, सौरव गांगुली ने दिया जवाब

कोलकाता। पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने रोहित शर्मा और विराट कोहली के एकदिवसीय रिकॉर्ड को 'असाधारण' करार देते हुए कहा कि इन दोनों दिग्गजों को 50 ओवर के प्रारूप में तब तक खेलते रहना चाहिए जब तक कि उनका प्रदर्शन अच्छा है। कुछ मीडिया रिपोर्टों में कयास लगाया गया है कि ऑस्ट्रेलिया का आगामी दौरा इन दोनों खिलाड़ियों का आखिरी वनडे दौरा हो सकता है। गांगुली ने इस बारे में पूछे जाने पर कहा कि उन्हें ऐसे किसी बात की जनकारी नहीं है। गांगुली ने कहा, 'मुझे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। इसलिए मैं इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दे सकता हूं।' गांगुली ने हालांकि इस बात पर जोर दिया कि उनके करियर को आगे बढ़ाने में प्रदर्शन सबसे महत्वपूर्ण कारक होना चाहिए। उन्होंने एक कार्यक्रम के इतर कहा, 'यह कहना मुश्किल है। जो भी अच्छा करेगा, वही खेलेगा। अगर वे अच्छा करते हैं, तो उन्हें खेलना जारी रखना चाहिए। कोहली का वनडे रिकॉर्ड असाधारण है, रोहित शर्मा के साथ भी ऐसा ही है। वे दोनों सफेद गेंद की क्रिकेट (सीमित ओवरों के मैच) में असाधारण हैं।' टेस्ट और टी20 अंतरराष्ट्रीय प्रारूण से संन्यास ले चुके इन दोनों खिलाड़ियों ने 2027 के विश्व कप के बारे में अपनी योजनाओं को अभी तक स्पष्ट नहीं किया है। भारत का एकदिवसीय श्रृंखला के लिए ऑस्ट्रेलिया दौरा 19 अक्टूबर से शुरू होगा, जिसके मैच पर्थ, एडिलेड और सिडनी में खेले जाएंगे। इसके बाद दिसंबर में भारत घरेलू मैदान पर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन वनडे मैच खेलेगा।

एशिया कप में पाकिस्तान-भारत के बीच मुकाबले पर... औपचारिक गारंटी नहीं दे सकता

एमिरेट्स क्रिकेट बोर्ड के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर का बयान

नई दिल्ली । भारत और पाकिस्तान के बीच पहलगाम में अप्रैल में हुए आतंकी हमले के बाद से तनाव बढ़ा हुआ है। भारत ने निर्दोष लोगों की जान का बदला लेने के लिए ऑपरेशन सिंदूर कर पाकिस्तान को सबक सिखाया है। दोनों के बीच छिड़े युद्ध पर भले ही विराम लग गया हो लेकिन रिश्ते अभी भी गर्त पर है। हाल में वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स के लीग और फिर सेमी मुकाबले से भारतीय टीम ने पाकिस्तान के साथ खेलने से मना किया। अब एशिया कप में दोनों टीमों के बीच होने वाले मुकाबले पर सवाल उठ रहे हैं। वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स (डब्ल्यूसीएल) के दो मैच रद्द कर दिए गए क्योंकि भारतीय खिलाड़ियों ने पाकिस्तान के खिलाफ खेलने से मना किया। इसी तरह, आगामी एशिया कप में भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले मैच का भविष्य भी अनिश्चित है। भारत और पाकिस्तान का मुकाबला 14 सितंबर को दुबई में होना है। संभावना है कि दोनों टीमें सुपर 4 और फाइनल में भी आमने-सामने हो सकती हैं। टूर्नामेंट शुरू होने में एक माह से भी कम समय बचा है और एमिरेट्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर सुब्हान अहमद ने सुझाव दिया है कि एशिया कप में दोनों टीमों का एक-दूसरे से न खेलना लगभग असंभव है। सुब्हान अहमद ने कहा, 卐हालांकि मैं औपचारिक गारंटी नहीं दे सकता लेकिन पाकिस्तान और भारत ना खेलें ऐसा कोई जोखिम नहीं दिख रहा। एशिया कप की तुलना निजी टूर्नामेंट जैसे वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स से नहीं की जा सकती, जहां भारत ने लीग स्टेज और सेमी-फाइनल दोनों में पाकिस्तान के खिलाफ खेलने से मना कर दिया था। दुबई और अबू धाबी को 2025 पुरुषों के टी20 एशिया कप के आधिकारिक मेजबान शहरों के रूप में पुष्टि की गई है। टूर्नामेंट का आयोजन 9 से 28 सितंबर तक के बीच होना है। दुबई 11 मैचों की मेजबानी करेगा जिसमें फाइनल भी शामिल है।

मैं उस मौके का फायदा उठाना चाहता था, द ओवल में अपनी 66 रनों की पारी पर बोले आकाश दीप

नई दिल्ली (एजेंसी)। द ओवल में खेले गए अंतिम टेस्ट मैच में आकाश दीप के बल्ले ने कमाल कर दिया। चौथे नंबर पर नाइटवॉचमैन के रूप में एक मुश्किल स्थिति में उतरते हुए इस तेज गेंदबाज ने अद्भुत धैर्य और संयम का परिचय देते हुए 94 गेंदों में 12 चौकों की मदद से अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ 66 रनों की पारी खेली। यशस्वी जायसवाल के साथ उनकी 107 रनों की साझेदारी निर्णायक मोड़ साबित हुई, जिससे भारत ने 5 मैचों की श्रृंखला 2-2 से बराबर कर ली।

आकाश ने पारी के बारे में बात करते हुए एक स्पोर्ट्स चैनल पर कहा, 'अगर हम अपने खेले गए मैचों पर नजर डालें, तो एक-दो मैचों को छोड़कर, निचला क्रम ज्यादा रन नहीं बना रहा था। यह बहुत जरूरी है कि निचला क्रम नंबर 9, 10 और 11 टीम के अच्छे प्रदर्शन के लिए कम से कम 25-30 रन जोड़े। जब मुझे नाइटवॉचमैन के तौर पर भेजा गया, तो मैं उस मौके का फायदा उठाना चाहता था और ज्यादा से ज्यादा समय तक वहां रहना चाहता था। मेरी टीम के भले के लिए यही एकमात्र योजना थी। सुबह जब मैंने उन्हें निराश देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि मैं यहां भी कुछ रन बना सकता हूं।' उनकी पारी का एक खास आकर्षण वह स्टाइलिश चौका था जिससे उन्होंने अपना पहला टेस्ट अर्धशतक पूरा किया।

यह पूछे जाने पर कि क्या यह योजनाबद्ध था या सिर्फ सहज ज्ञान, आकाश ने खुलासा किया, 'मुझे लगा कि अगर गेंद लेगसाइड पर है और हवा में ऊपर जाती है, कोई फील्डर नहीं है, तो हम वहां बाउंड्री लगा सकते हैं। योजना यह थी कि अगर गेंद लेग-स्टंप क्षेत्र में है, तो मैं उसे हवा में मारूंगा। शॉट थोड़ा गलत टाइमिंग से लगा।' अपने पहले टेस्ट अर्धशतक के साथ आकाश दीप ह्यूग ट्रम्बल, शेन वार्न, इमरान खान, कीथ मिलर और रिचर्ड हैडली के साथ एक मैच में 10 विकेट और इंग्लैंड दौरे पर अर्धशतक लगाने वाले 12वें खिलाड़ी बन गए हैं।

ओवल टेस्ट से पहले 11.48 के प्रथम श्रेणी औसत के साथ आकाश दीप इस सदी में इंग्लैंड में चौथे नंबर पर पुरुष टेस्ट अर्धशतक बनाने वाले सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली और शुभमन गिल के साथ चौथे भारतीय हैं। आकाश दीप ने आलोचकों को चुप करा देने वाली, युग-परिभाषित जीत में 10 विकेट लेकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। एजबेस्टन में इंग्लैंड पर 336 रनों से जीत पिछले महीने इस स्थल पर उनकी पहली टेस्ट जीत। टेस्ट मैच के दौरान आकाश ने इंग्लैंड में भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ स्पेल डालकर एक बड़ा रिकॉर्ड बनाया।

तेज गेंदबाज ने इंग्लैंड में भारत के लिए एक मैच में सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी आंकड़े दर्ज करके रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज कराया और चेतन शर्मा के लंबे समय से चले आ रहे रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया। आकाश दीप के 10/187 के मैच के आंकड़े शर्मा के

10/188 के आंकड़े से आगे निकल गए। आकाश दीप 2011 में इसी स्थान पर इसी प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ अमित मिश्रा (84 रन) के बाद 50 से अधिक रन बनाने वाले पहले भारतीय नाइटवॉचमैन भी हैं। यह साझेदारी इस मौजूदा इंग्लैंड दौरे में 18वीं 100 रन की साझेदारी थी, जो इस सदी में (2000 के बाद से) किसी टेस्ट श्रृंखला में सर्वाधिक है, इससे पहले 2003-04 में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में 17 बार साझेदारी हुई थी।

मायासभा में कैसा होगा दिव्या दत्ता का किरदार, एक्ट्रेस ने किया खुलासा

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेत्री दिव्या दत्ता ने तेलुगु सीरीज मायासभा- द राइज ऑफ द टाइटन्स में अपने किरदार को लेकर खुलकर बात की। इसमें वह राजनीतिक नेता इरावती बोस का किरदार निभा रही हैं। उन्होंने बताया कि उनका किरदार चालाकी से दूसरों को अपनी बातों में फंसाने वाला और उनका फायदा उठाने वाला है। उन्होंने बताया कि उनका किरदार इरावती ताकतवर है; साथ ही, वह अपनी कमजोरियों को भी छुपाती हैं ताकि लक्ष्य को हासिल करने में उनके रास्ते में कोई बाधा न बन सके। दिव्या दत्ता ने कहा कि इरावती के चालाक और हिसाब से काम करने वाले गुण उनके लिए सिर्फ एक कमजोरी या ताकत नहीं हैं, बल्कि ये सब मिलाकर उनके जीवन की स्थिति को समझने का एक तरीका है। उन्होंने बताया कि एक अभिनेता के रूप में, उनका काम यह है कि वे अपने किरदार को निभाते वक्त इन गुणों को अलग-अलग तरीके से दिखाएं, जैसे कभी कुछ शब्दों को थोड़ा ऊपर, कभी नीचे, या कभी थोड़ा बदलकर, ताकि वह किरदार सच्चे और प्रभावी तरीके से दर्शकों तक पहुंच सके। एक्ट्रेस ने 1994 में फिल्म इश्क में जीना, इश्क में मरना से अपने करियर की शुरुआत की थी। वह अपने किरदारों में अलग-अलग पहलुओं को एक्सप्लोर करना पसंद करती हैं। न्होंने कहा, जब हम किसी किरदार पर काम करते हैं, तो हम उसमें थोड़ी सी चालाकी, थोड़ी सी मस्ती, थोड़ी सी बुद्धिमानी, या कभी-कभी एक इमोशनल उतार-चढ़ाव जोड़ते हैं। यह सब मिलाकर किरदार को और भी वास्तविक और दिलचस्प बनाता है।

मायासभा- द राइज ऑफ द टाइटन्स एक राजनीतिक ड्रामा वेब सीरीज़ है, जिसे देवा कट्टा और किरण जय कुमार ने डायरेक्ट किया है। इसमें चैतन्य राव, आधी, रवींद्र विजय, नासर, साई कुमार और चरिता वर्मा नजर आएंगे। इसके अलावा रघु बाबू, भावना वझापंडल और तान्या एस रविचंद्रन जैसे कलाकार भी सीरीज का हिस्सा हैं। यह सीरीज़ 1990 के दशक के आंध्र प्रदेश की राजनीति पर आधारित है।

सीजनल नहीं, इंसानी कहानियां हैं क्वीर स्टोरीज

अभिनेत्री-निर्माता श्वेता त्रिपाठी के ड्रामा कॉक को मुंबई और दिल्ली में प्राइड मंथ के दौरान खूब सराहना मिली। उन्होंने कहा कि क्वीर कहानियां सीजनल नहीं, बल्कि मानवीय हैं, जो साल भर सम्मान की हकदार हैं। श्वेता अपनी स्टेज प्रोडक्शन कंपनी ऑलमायटी के तहत इस ड्रामा को भारत के अन्य शहरों में ले जाने की तैयारी कर रही हैं। श्वेता ने बताया, यह ड्रामा मेरे दिल के बहुत करीब है। एक सहयोगी के रूप में, हमें हर दिन इन कहानियों को बढ़ावा देना चाहिए। ये इंसानी कहानियां हैं, जिन्हें जगह और सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने बताया कि एक कलाकार के रूप में वह उस दुनिया की विविधता को दिखाने की जिम्मेदारी महसूस करती हैं, जिसमें हम रहते हैं। कॉक एक ड्रामा है, जो प्यार, पहचान और सेक्सुअलिटी जैसे विषयों पर बनी है। ब्रिटिश नाटककार माइक बार्टलेट लिखित और मनीष गांधी के निर्देशन में बने इस नाटक में एक पुरुष की कहानी है, जो अपने पुराने पुरुष साथी और एक महिला के प्रति आकर्षण के बीच उलझा है। यह नाटक भारतीय रंगमंच में एलजीबीटीक्यू प्लस प्रतिनिधित्व को लेकर महत्वपूर्ण चर्चा छेड़ रहा है। श्वेता ने बताया कि वह साल 2025 और 2026 तक इस नाटक को और शहरों में ले जाने की योजना बना रही हैं, ताकि नए दर्शकों के साथ भी यह बातचीत जारी रहे। नाटक के अलावा, श्वेता एक निर्माता के रूप में अपनी पहली फिल्म की तैयारी कर रही हैं, जो एक मार्मिक क्वीर प्रेम कहानी होगी। एक्टिंग की बात करें तो श्वेता साल 2023 में आई विपुल मेहता की कॉमेडी फिल्म कंजूस मखीचूस में नजर आई थीं। कंजूस मखीचूस का निर्माण सोहम रॉकस्टार एंटरटेनमेंट के साथ थंडरस्काई एंटरटेनमेंट ने किया है। यह फिल्म प्रसिद्ध गुजराती नाटक सजन रे झूठ मत बोलो पर आधारित है। फिल्म में श्वेता त्रिपाठी के साथ कुणाल खेमू, पीयूष मिश्रा, अलका अमीन और राजीव गुप्ता अहम भूमिकाओं में हैं। जी5 पर रिलीज हुई कंजूस मखीचूस कमीडियन राजू श्रीवास्तव की आखिरी फिल्म रही।

बैटल ऑफ गलवान का उद्देश्य वास्तविक नायकों को सम्मान देना है

अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह जल्द ही सलमान खान के साथ फिल्म में नजर आएंगी। इस फिल्म का टाइटल बैटल ऑफ गलवान है। उन्होंने फिल्म को साहस और वीरता की एक सच्ची और जमीनी कहानी बताया। वास्तविक घटनाओं पर आधारित इस फिल्म को चित्रांगदा ने रियल हीरोज का सम्मान बताया। अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह का कहना है कि उन्हें इस फिल्म में सबसे खास चीज जो नजर आई है, वह थी इसकी भावनात्मक गहराई और मजबूत थीम। चित्रांगदा ने फिल्म के बारे में बताया, यह एक ऐसी कहानी है जो साहस और वीरता को दर्शाती है। आर्मी बैकग्राउंड होने की वजह से मैंने इस फिल्म से जुड़ने के बारे में सोचा। मैंने इस घटना के बारे में पहले काफी सुना था। इस फिल्म का हिस्सा बनना मेरे लिए गर्व की बात है। चित्रांगदा सिंह ने आगे कहा, फिल्म की कहानी सुनकर गर्व होता है, और मैं फिल्म में अपनी भूमिका को एक किरदार से बढ़कर मानती हूं, क्योंकि फिल्म का उद्देश्य केवल वास्तविक नायकों को सम्मान देना और कम चर्चित कहानियों को मुख्यधारा में लाने का एक प्रयास है।

फिल्म में सलमान खान के साथ काम करने के अनुभव के बारे में चित्रांगदा ने कहा, सलमान जिस प्रोजेक्ट का हिस्सा होते हैं, वह अपने आप में बड़ा बन जाता है। चाहे अभिनेता हो या तकनीशियन, सब कुछ बड़े स्तर पर होता है। यह कहानी ऐसी है जिसे बताया जाना चाहिए, और मुझे खुशी है कि मैं इसका हिस्सा हूं। इससे पहले सलमान खान फिल्म्स ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर इंडिया गेट से चित्रांगदा सिंह की एक खूबसूरत तस्वीर शेयर की। साथ में लिखा, सादगी और शालीनता का रूप चित्रांगदा सिंह का बैटल ऑफ गलवान की टीम में स्वागत है।

इस वजह से रुबीना ने स्वीकारा पति पत्नी और पंगा का ऑफर

लोकप्रिय टीवी अभिनेत्री रुबीना दिलैक और उनके पति अभिनव शुक्ला पॉपुलर शो पति-पत्नी और पंगा में नजर आ रही हैं। अभिनेत्री ने आईएएनएस के साथ बातचीत में बताया कि उन्होंने मां बनने के बाद शो का ऑफर क्यों स्वीकार किया। अभिनेत्री ने बताया, इस शो की कहानी उनकी जिंदगी के नए दौर से मेल खाती है। साथ ही इस शो के जरिए उन्हें अपने पति अभिनव के साथ स्क्रीन पर नया अनुभव करने का मौका मिला। मां बनने के बाद मैं अपने पति के साथ ज्यादा समय बिताना चाहती थी। कुछ मस्ती भी करनी थी, इसलिए मैंने यह शो किया।

जब अभिनेत्री से पूछा गया, क्या रियलिटी शो स्क्रिप्टेड होते हैं? अभिनेत्री ने बताया, रियलिटी शो स्क्रिप्टेड नहीं होते, लेकिन उन्हें थोड़ा निर्देशित किया जाता है। अगर कोई चीज अच्छी चल रही हो, तो शो के निर्माता उसे और हाइलाइट करते हैं। यह स्क्रिप्टेड नहीं, बल्कि गाइडेड होता है। वहीं, अभिनेता अभिनव शुक्ला ने रियलिटी शो में स्क्रीन टाइम और रिश्तों की लंबी उम्र के बारे में भी बात की। उनके मुताबिक, रिश्ते में जितना ज्यादा स्क्रीन टाइम होता है, रिश्ता उतना ही कम समय तक चल सकता है। रुबीना ने उनकी बात का समर्थन करते हुए कहा, अभिनव सही कह रहे हैं। जितना ज्यादा हम एक-दूसरे की बातों और सोच को स्वीकार करेंगे, रिश्ता उतना ही बेहतर होगा। एक अच्छा रिश्ता तब बनता है, जब हम एक-दूसरे को वैसे ही अपनाएं, जैसे हम हैं। जब हम ये समझते हैं कि हम अलग हैं और फिर भी एक-दूसरे की इज्जत करते हैं, तो रिश्ते में प्यार और समझ बढ़ती है।

अभिनव शुक्ला ने बताया कि जब किसी बात पर बहस या मतभेद होता है, तो वह उसे संभालने का एक शांत तरीका अपनाते हैं। अभिनव ने कहा, जब हम दोनों के बीच झगड़ा होने लगता है, तो मैं थोड़ा पीछे हट जाता हूं, या फिर रुबीना को स्पेस देता हूं, थोड़ी देर बाद शांत होकर दोबारा उस बात पर चर्चा करता हूं, ताकि समस्या आसानी से सुलझ जाए। कुछ परेशानियां, कुछ घंटों में सुलझ जाती हैं, तो कुछ में ज्यादा समय लग जाते हैं। अभिनव ने मजाकिया अंदाज में कहा, हमारे रिश्ते में तो मैं बस यही कहता हूं, जो तुम कहो। और, अब ये लाइन काफी फेमस हो गई है। शो की शुरुआत 2 अगस्त से हो चुकी है और इसे कलर्स टीवी पर प्रसारित किया जा रहा है। शो को अभिनेत्री सोनाली बेंद्रे और कॉमेडियन मुनव्वर फारूकी होस्ट कर रहे हैं।

सबसे महंगी एक्शन फिल्म बनी वॉर 2, रजनीकांत की 'कूली' को देगी कड़ी टक्कर

400 करोड़ का बजट, 90 करोड़ में तेलुगु राइट्स और सुपरस्टार्स को मुनाफे में हिस्सेदारी। 'वॉर 2' संभवत- बॉलीवुड की सबसे बड़ी एक्शन फिल्म बनने वाली है। फिल्म में पानी की तरह पैसा कहां बहाया गया? और इससे थिएटर मालिकों और डिस्ट्रीब्यूटर्स को इतनी उम्मीद क्यों हैं?

स्टार्स और टेक्निकल टीम की फीस

फिल्म में ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर जैसे बड़े सितारे हैं, जिनकी फीस 50 से 75 करोड़ रुपये तक मानी जा रही है। इसके साथ ही कियारा आडवाणी, निर्देशक अयान मुखर्जी और टेक्निकल क्रू की फीस को मिलाकर सिर्फ कास्ट और टीम पर 100 से 150 करोड़ रुपये तक का खर्च हुआ है।

इंटरनेशनल शूट और वीएफएक्स

डायरेक्टर अयान मुखर्जी ने फिल्म को इंटरनेशनल लेवल पर शूट किया है। इसमें हॉलीवुड स्टंट- कोरियोग्राफर्स की मदद से बोट चेज, कार एक्शन और हैंड-टू-हैंड फाइट सीन शामिल किए गए हैं। ड्रोन शॉट्स, ग्रीन स्क्रीन और हाई-क्वालिटी वीएफएक्स की वजह से पोस्ट-प्रोडक्शन का खर्च काफी बढ़ा।

आईमैक्स और डॉल्बी सिनेमा रिलीज

'वॉर 2' भारत की पहली फिल्म होगी जो डॉल्बी सिनेमा में रिलीज होगी। साथ ही इसे आईमैक्स स्क्रीन्स पर भी रिलीज किया जाएगा। इसके लिए खास कैमरा इक्विपमेंट और मास्टरिंग की जरूरत होती है, जो कि बहुत महंगा है। फिल्म में काम कर रही इंटरनेशनल स्टंट टीमें न सिर्फ महंगी हैं, बल्कि उनके साथ शूटिंग के दौरान बीमा, सुरक्षा और बॉडी डबल्स का खर्च भी जुड़ा होता है। फिल्म के ग्लोबल डिजिटल कैंपेन, सोशल मीडिया, इंटरनेशनल म्यूजिक स्कोर और डबिंग पर भी बड़ी रकम खर्च की गई है।

इंटरनेशनल स्केल पर 6 देशों में शूटिंग

'वॉर 2' की शूटिंग 150 दिनों में 6 देशों में हुई है। स्पेन के सलामांका और मैड्रिड में कार चेज सीन, अबू धाबी में बोट चेज और इटली में एक्शन सीन शूट किए गए। जापान और रूस में भी कुछ अहम सीन फिल्माए गए हैं। क्लाइमैक्स का 15 दिन का शेड्यूल मुंबई में यशराज स्टूडियो और फिल्म सिटी में हुआ है। पूरी शूटिंग बेहद सख्त सिक्योरिटी के बीच की गई ताकि कुछ भी लीक न हो।

फरहान अख्तर ने राशि खन्ना की जमकर तारीफ की

'120 बहादुर' का टीज़र लॉन्च केवल एक प्रमोशनल इवेंट नहीं था, बल्कि यह आपसी सम्मान, कलात्मक तालमेल और साझा उद्देश्य का एक सशक्त उत्सव बन गया। इस कार्यक्रम में पैन-इंडिया स्टार राशी खन्ना और फरहान अख्तर ने दर्शकों को अपने ऑफ-स्क्रीन रिश्ते की एक झलक दिखाई, जो आपसी सम्मान और सच्ची केमिस्ट्री पर आधारित था। टीज़र में जहाँ रेजांग-ला के युद्ध की एक गंभीर और भावनात्मक कहानी दिखाई गई, वहीं मंच पर एनर्जी ताज़गी भरी, फिर भी बेहद सम्मानजनक रही। फिल्म में राशि के किरदार पर बात करते हुए फरहान अख्तर ने उनकी तारीफ़ करने से खुद को रोक नहीं पाए- राशि, आपके साथ काम करना एक बेहद शानदार अनुभव रहा। वह कहती हैं कि यह कहानी खुद उनके पास आई, लेकिन मुझे लगता है कि शायद इसका उल्टा हुआ है। मेरा मानना है कि रास्ते खुद उन लोगों को ढूंढते हैं जो उन्हें निभाने के लिए सबसे उपयुक्त होते हैं। और इस भूमिका के लिए राशि को लेना — इससे बेहतर निर्णय हम कर ही नहीं सकते थे। वह फिल्म में बेहद शानदार हैं। आपने जो अभी देखा है, वह तो सिर्फ़ एक टीज़र है — असली जादू अभी बाकी है। यह एक सच्चे सम्मान का पल था, जिसने राशि को भी भावुक कर दिया। उन्होंने उतनी ही गर्मजोशी और सच्चाई से जवाब दिया- जब हम इस फिल्म के लिए एक साथ आए, तो सबसे पहले मुझे फरहान सर का धन्यवाद करना है क्योंकि उन्होंने ही बातचीत की शुरुआत की। मैं थोड़ी शर्मीली हूं, लेकिन सर बहुत ही विनम्र और सहज थे।एक व्यक्ति के रूप में उनकी ख़ासियत पर विचार करते हुए, उन्होंने आगे कहा- मेरे माता-पिता ने हमेशा सिखाया है कि किसी इंसान को समझना हो, तो यह देखो कि वह अपने आसपास के लोगों से कैसा व्यवहार करता है। और फरहान सर हर किसी को बराबरी का सम्मान देते हैं — चाहे वह कोई भी हो। यह एक ऐसी खूबी है जो मैंने बहुत कम लोगों में देखी है। इसलिए मैं उन्हें एक इंसान के तौर पर और भी ज्यादा पसंद करती हूं। बेशक, मैं उन्हें एक अभिनेता और निर्देशक के रूप में सराहती हूं, लेकिन मुझे लगता है कि मैं उन्हें एक इंसान के रूप में भी बहुत पसंद करती हूँ। वह बहुत ही प्रेरणादायक और बहुत ही अनुशासित हैं। और अब तो सब जानते हैं कि जब मैं कुछ कहती हूं, तो दिल से कहती हूं। और मैं दिल से कह रही हूं — यह अनुभव वाकई अद्भुत रहा है। और मैं सच में उम्मीद करती हूं कि आगे भी मुझे उनके साथ काम करने के ऐसे और मौके मिलें।

मीडिया ने भी उनकी सहज दोस्ती और मंच पर साझा किए गए हल्के-फुल्के पलों को तुरंत भांप लिया। फरहान और राशि की हाज़िरजवाबी और सेंस ऑफ ह्यूमर ने पूरे इवेंट को जीवंत बनाए रखा। '120 बहादुर' जैसी फिल्म, जो गहरे भावनात्मक स्तर और जटिल पात्रों पर आधारित है, उसमें ऑफ-स्क्रीन तालमेल ऑन-स्क्रीन प्रभाव को और भी गहरा बना देता है। और जहाँ एक ओर पूरी नज़र फिल्म की कहानी और इसके भव्य पैमाने पर है, वहीं अब इसके मुख्य कलाकारों के बीच की यह सधी हुई, पर सच्ची केमिस्ट्री दर्शकों की उत्सुकता को एक और स्तर पर ले जा रही है।

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक अनुज कुमार के द्वारा एजीएस पब्लिकेशंस एफ 23, सेक्टर 6, गौतम बुध नगर, उत्तर प्रदेश 201301 से मुद्रित व गांव बुखारीपुर, पोस्ट ढवारसी, तहसील हसनपुर, जनपद अमरोहा, उत्तर प्रदेश पिन कोड 244242 से प्रकाशित।
संपादक- अनुज कुमार, R.N.I. No.- UPHIN/25/RAA18, मो0.9456884327 , E-mail- officialsabkasapna@gmail.com, www.sabkasapna.com नोट- समस्त विवादों का न्यायिक क्षेत्र अमरोहा जनपद न्यायालय होगा।